चैतन्य लहरी

1990

एक नया दौर शुरू हो रहा है। जहाँ हमारे प्रश्न नहीं रहे। सबके प्रश्न, सारे विश्व के प्रश्न, हमारे प्रश्न हो गए। इसके लिए प्रबलता, बड़ापन और एक ऊँचाई चाहिए। इसकी ज़िम्मेदारी आप लोगों पर है। ये सबके घर घर में पहुँचाना है। सबको आनन्द देना है। जिस प्रकाश को आपने प्राप्त किया वोही आपको सबको देना है, पूरे आत्म विश्वास के साथ।

जयपुर

श्री माताजी का उत्तर भारत का दौरा जयपुर से शुरु हुआ। वहाँ उनका हार्दिक स्वागत किया गया। गोविंदजी की मॉदिर में दो प्रोग्राम किए गए। ये पहली बार था जब कि इस मॉदिर में ऐसे कार्यक्रम करनेकी आज्ञा, जयपुर की महारानी ने दिया। जयपुर में गणगौरी का त्यौहार बहुत प्रसिध्द है। श्री माताजी ने समझाया कि ये श्री गणेश जी और श्री गौरी जी की पूजा है। परम्परा के अनुसार जयपुर की महारानी, श्री गौरी जी की मुर्ति का पूजन करतीं हैं, और फिर उस मूर्ति को रीति अनुसार सजाय गए हाथीओं और घोडों के साथ, एक बहुत ही रंग बिरंगे जलूस में, जयपुर शहर में घुमाया जाता है। लाखों लोग इस जलूस को देखने और देवी का दर्शन करने आते हैं।

इस बार, जलूस निकालने से पहले, जयपुर के राजघराने ने श्री माताजी की पूजन, बहुतही सुन्दर राजघराने की रीति अनुसार की। फिर, श्री माताजी ने गौरी की मूर्ति को वाइब्रेट किया। वो मूर्ति फिर जयपुर का सारा शहर घूमी, जिससे सारे शहर में चैतन्य फैल गया।

हरयाना

इसके बाद, करनाल और यमुना नगर में दो प्रोग्राम रखे गए। यह पहली बार था कि हरयाना में ऐसा कार्यक्रम रखा गया। श्री माताजी ने समझाया कि करनाल शहर का नाम महाभारतके प्रसिद्ध योदा कर्ण के पीछे पड़ा, जिन्होंने महाभारत युध्द में अपना शिविर यहाँ लगाया था। मॉदिर का हॉल लोगों से भरा हुआ था। कई बाहर बैठे थे। जागृति देने के पश्चात, एक गूँगा और बहरा लड़का, श्री माताजी से आर्शीवाद लेने स्टेज पर आया। श्री माताजी ने उसका विशुध्द चक्र ठीक किया, तो कमाल की बात! कि वो लड़का बोलने और सुनने लगा। ये चमत्कार सबके सामने हुआ। और इस चमत्कार से सहज योग तीव्र अग्नी की भाँति वहाँ फैलना शुरु हो गया है।

दिल्ली

दिल्ली का रामलीला मैदान एक बहुत ही ऐतिहासिक महत्त्व रखता है। वहाँ एक बहुत ही सुन्दर बनाया हुआ मचान है, जहाँ से हिन्दुस्थान के सबसे मशहूर राजनीतिज्ञों ने व्याख्यान दिये हैं। ये ऐतिहासिक मैदान तो इतना धन्य हो गया जब श्री आदि शक्ति के वाइब्रेशन की प्रतिध्वनि चारों तरफ गूँजी और हजारों लोग पार हो गए।

दिल्ली तो तीन बार धन्य हुआ। पहले, श्री माताजी के जन्म दिवस का त्यौहार मनाया गया। फिर, श्री सी॰पी॰ श्रीवास्तव का सत्तर वर्ष होने पर, और श्री माताजी व श्रीवास्तव साहब की शादी

का वर्षगाँठ मनाया गया। सब सहज योगीयों ने श्रीवास्तव साहब से निवेदन किया कि उन्हें "पापा जी" के नाम से बुलाया जाए। उन्होंने बड़े विनय पूर्वक आज्ञा दे दी। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि, "माँ का तो प्रेम विशाल होता ही है, पर आप सबको दिलासा देना चाहता हूँ कि पिता का प्रेम भी कुछ कम नहीं है।" फिर, श्री देबू चौधरी के सितार वादन ने उस शाम में एक बहुत ही आनन्द दायक रंग भर दिया।

कलकत्ता

परम्परा अनुसार, बंगाल में, एक रेशम की साड़ी को देवी पर चढ़ाया जाता है। श्री माताजी अपने बच्चों की भक्ति देखकर इतनी खुश हुई कि उन्होंने पहली बार श्री आदि शक्ति की पूजा कलकत्ता में करवाई। उनकी अपार कृपा से सब ध्यान में बहुत ही गहरे उतर गए। तिवोली पार्क में दो पब्लिक प्रोग्राम हुए जिसमें वैसे ही गहराई का अनुभव पाया गया जो पूजा में पाया गया था। फिर, सहज योगीयों के साथ श्री माताजी ने एक नाव पर हुबली नदी का दौरा किया। ये दौरा तो सच मुच गंगा में स्नान करके पवित्र होने समान था, क्यूँकि श्री माताजी ने सबको पवित्र कर दिया। पुराने सहज योगी सारे रस्ते नाचते और गाते गए। और नये सहज योगीयों को श्री माताजी से मिलने का मौका मिला।

बंम्बई

बम्बई शहर को श्री माताजी के प्रवचन सुनने का सबसे ज़्यादा मौका मिला है। मगर इस बार तो सत्य को खोजने वालों की संख्या और उनकी उत्तमता तो कमाल ही कर गई, जिससे सहज योग के नये दौर की स्थापना हो गयी है। जागृति के बाद सब लोग गहरे ध्यान में बैठे रहे और जब तक श्री माताजी ने वहाँ से प्रस्थान नहीं कर लिया, कोई हिला तक नहीं। इतने सारे नयें खोजीयों के साथ एक ऐसे सामूहिक गहराई का अनुभव पाना एक बहुत ही आनन्दमय अवसर था। दूसरे दिन श्री माताजी मस्कट के लिए रवाना हो गईं, शायद अमीरत में नया क्षितिज खोलने के लिए।

सूचना

हिन्दी चैतन्य लहरी का वार्षिक अंशदान रूपये 108/- है। कृपया अपना पूरा पता व पिन कोड सहित "डिवाईन कूल ब्रीज़" के नाम एक डिमान्ड ड्राफ्ट भेज दें। जो नकद पैसे देना चाहे, वो कृपया अपना पूरा पता व पिन कोड सहित रूपये 108/- नकद, अपने केंद्र के प्रमुख को दें।

पता - डिवाईन कूल ब्रीज़
प·बा·नं· 1901
कोथरूड
पुणे - 411 029·

वार्षिक अंशदान - डिवाईन कूल ब्रीज़

अंग्रजी : रूपये 200 वार्षिक 1990
मराठी : रूपये 108 वार्षिक 1990
हिन्दी : रूपये 108 वार्षिक 1990

जन्मदिन का भाषण, मुंबई 24/3/1990

अब बीस साल हो गए हैं सहजयोग करते करते। उसपर जितना काम होना चाहिए था, उतना हो नहीं पाया है। ऐसा मुझे लगता है। उसकी वजह है कि हम लोगों को इस बात का ज्ञान नहीं है कि ये कितना बड़ा काम है, कितना दिव्य है। ऐसा तो कभी काम हुआ ही नहीं। ऐसा किसी भी अवतरण में नहीं हुआ। सब तरह से आप सहजयोग की ओर दृष्टि डालें कि समाज में भी इसमें फर्क आ गया है। स्वतंत्रता के बाद लोग जो स्वराचार में फसने वाले थे, दूसरे देशों में जो फँस गए थे और जिनका पूर्णतय सर्वनाश हो गया, ऐसे देशों में भी सहजयोगने बहुतों को बचा लिया। और ऐसा तो कभी कहीं हुआ ही नहीं। बहुत से अवतरण हुए, पर किसी को भी ऐसी अन्दर की शक्ति नहीं मिली कि जिससे वो उसके अन्दर स्थापित हो जाती।

मनुष्य सारे समय कुछ न कुछ करते रहता है। कोई अपने को हिन्दु, कोई मुसलमान, कोई ईसाई या कुछ सोचता है। और सब सोचते हैं कि हम सबसे ठीक हैं। लेकिन इन में कोई सा भी धर्म ऐसा नहीं है, जिस धर्म के अन्दर रहने से आप धार्मिक हो जाएँ। कोई भी आदमी कोई सा भी पाप कर सकता है किसी भी धर्म के नाम। कोई धर्म का बन्धन नहीं। सहजयोग में आत्मा का बन्धन पड़ जाता है। आत्मा की जागृति बहुत बड़ी चीज है, जो हमारे जीवन को प्रकाशित कर देता है। इसके बारे में सारे ही अवतरणों ने कहा है कि आप अपने को जानो। अपने को जाने बगैर हो नहीं सकता। और वो समय जिसके बारे में इन्होंने कहा था वो आज आ गया है। और अब भी लोग अन्धों जैसे घूम रहे हैं। और हम लोग ये समझ नहीं पाते कि हमारे पास कितनी बड़ी शक्ति आ गई है। और हमें इसे कितना बढ़ाना चाहिए। और हमारा क्या उत्तरदाईत्व है। अभी तक हम लोग छोटी छोटी चीजों में उलझ जाते हैं। आश्चर्य की बात है। हाँ धार्मिकता तो आ गई, लेकिन और छोटी छोटी चीज़े बहुत सी ऐसी हैं जो हमें गड़बड़ में डालती हैं। और ये बड़ी पुरातन चीज है। सहजयोग इतना गहन व सूक्ष्म है। हमारी जो दृष्टि है वो भी सूक्ष्म हो गई है। हमारे समझ में नहीं आता कि हमारे साथ क्या हुआ है।

और इसलिए आज इतने साल होने के बाद भी सहजयोग में लोगों की उन्नीत जितनी होनी चाहिए थी उतनी हो नहीं पाई न अन्दर न बाहर। आपसी झगड़े बहुत सूक्ष्म रूप ले चुके हैं। जिसे कहते हैं मस्त मौला वो बात आई नहीं है। अभी मैं आस्ट्रेलिया गई थी। वहाँ मैं हैरान हो गई, कि ऑस्ट्रेलिया में इतना काम किया था, इतने हज़ार लोगों को पार कराया। तो उसके बाद हर एक सैन्टर में से पचास फीसदी लोगों को निकाल दिया। पचास फीसदी लोगों से कहा कि आप किसी काम के नहीं, आप निकल जाओ। फिर तरह तरह के रूपए इक्कठे किए गए। अजीब गरीब चीजें जो मैं सोच भी नहीं सकती कि कोई सहजयोगी कर सकता है। और आपस के लीडरों का झगड़ा। मुझे देखते सब रो पड़े। "माँ, आप कहाँ चले गए थे"।

सारे तरफ मैने जो भी देखा तकलीफें बहुत सूक्ष्म हो गई। आपस का प्यार, आपस का सम्बन्ध, इसकी सूझबूझ जब तक हम में नहीं आयेगी, हम इस आनन्द को नहीं ले पायेंगे। हम लोगों के आपसी रिश्ते इतने सुन्दर है, इतने नाज़ुक व इतने बढिया हैं, कि उनको समझे बगैर हो सकता है वो टूट जाएँ। क्योंकि उसके सूत्र बहुत नाज़ुक हैं। वहाँ मेहनत करने के बाद देखा गया कि फिरसे लोग एक साथ जुड़ गए। फिर से आनन्द विभोर हो गए। सब के सब इक्कठे हो गए और अन्दर चले गये। तो हमारे लिए एक बहुत बडी चीज है कि हम तो आनन्द के सागर में डूब रहे है। और आनन्द को हमने प्राप्त किया। अब इसको बाँटना है। और इस आनन्द को शाश्वत बनाना है, हमेशा के लिए। ये आनन्द तभी शाश्वत रह सकता है जब हम अपने क्षुद्रता को छोड दें। जैसे कि एक बूँद जो सागर हो गई। उसकी सारी क्षुद्रता खत्म हो गई, उसकी मर्यादाएँ टूट गई। और उस सागर के साथ ही वो उठता है, गिरता है, और उस सागर के साथ ही सारे कार्य करता है। माने ये कि जो परम चैतन्य जिसे हम जानते हैं, जो हर समय हमें देखता है। सम्भालता है, और हमारे हर एक कार्य को देखता है, उस परम चैतन्य को हमने सब कुछ सौंप दिया। वो परम चैतन्य जो है इतना कार्यान्वित है, उसकी तो कमाल है। वो जिस तरह से कार्य करता है, जो भी कुछ करता है, सिर्फ आपके यश व हित के लिए। पूरी समय उसका कार्य चलता है। और उस कार्य में हमें कुछ करने का नहीं। सिर्फ हमें उसमें रत होना है। उसमें एक जान होना है। एक नया संसार हमें बसाना है। और उस संसार में हजारों के तायदाद में हमें उतरना पड़ेगा।

खासकर बम्बई में बहुत मेहनत की है। बहुत सालों से मेहनत की है। और उस मेहनत में सबको सोचना चाहिए, सबेरे उठकर रोज, कि हमने सहजयोग के लिए क्या किया, और आज क्या करेंगे और हर शाम को सोचना चाहिए, आज हमने क्या किया, और आगे सहजयोग के लिए क्या करेंगे। विचारधारा अगर सहजयोग की बना रहे तो उनमें शान्ती होती है, उनमें विचारता स्थापित होती है। जबके हम कुछ कर नहीं रहे। ये तो सारा कार्य परम चैतन्य कर रहा है।

मैं जब रूस गई थी तो दो हज़ार आदमी बाहर, और दो हज़ार आदमी अन्दर हाल में थे। और सारे के सारे पार हो गए। कीव, मॉस्को, व लेनिनग्राड गए। और उन लोगों में मैंने देखा कि इतनी गहनता है। हम कैनबरा गए, और वहाँ से सात लोग रूस के ऐमबसी से आए और पार हो गए।

तो पता नहीं हमारे अन्दर जो धर्म का प्रभाव है, ये ज़्यादा है, जो कि मनुष्य का बनाया हुआ धर्म है। या हमारे अन्दर अहंकार की बड़ी ज़बरदस्त छाप है। सहजयोग के लिए हम तयार हैं या नहीं, ये सोचना चाहिए। हम इसके सिपाही हैं। परमात्मा ने हमें इसके लिए चुना है। और हमें इस कार्य में ही वो इस्तेमाल करनेवाले हैं। परम चैतन्य को ऐसे गहरे लोग चाहिएँ। दो चार भी गहरे लोग हो जाएँ तो उनके देश का कल्याण हो सकता है। जैसे पूर्वी इलाक के लोग सारे पार हो गए, रूसमें। और जैसे वो अपने देश गए, हर एक देश में बदल हो गया एक दम से। वे हैं गहरे लोग। बरलिन की दिवार गिर गई।

लेकिन अपने यहाँ ये बात नहीं है। वो गहरापन नहीं है। छोटी छोटी चीजों में भी हम अभी भी उलझे हुए हैं। कुछ ना कुछ रुकावट है। हम लोग सब कार्य करते रहते हैं, ये करना है, वो करना है। ठीक है। लेकिन वो मुख्य नहीं है। मुख्य है सहजयोग। आप इसलिए दुनिया में आये हैं कि आप लोग सहजयोग करें। और सहजयोग में आप पूरीतरह चिपके रहें। इसलिए अपने देश का कल्याण नहीं हो रहा। इतने बड़े सहजयोगी बैठे हुए हैं। इस देश का कितना बड़ा कल्याण होना चाहिए था। पर हो नहीं रहा। क्या वजह है? जहाँ कि तीन चार लोगों ने देशों को बदल डाला।

ऑस्ट्रेलिया में भी हमने देखा कि पहले वहाँ कुछ कैदी लोग गए और उनके साथ जेलर भी गए। शुरुआत ऐसी हुई ऑस्ट्रेलिया की। और उसके बाद अभी ऐसे लोग जो लीडर थे वो तो हो गए जेलर, और बाकी सब कैदी। और कैद खाने में हैं। वहाँ ये बात समझ में आती है कि गड़बड़ हो गई और चीज ठीक हो जाएगी। पर मुझे हिंदुस्थान में समझ नहीं आता कि यहाँ ऐसे ओछेपन की बात क्यूँ होती है। कि लीडर कौन है, क्यूँ है। ये छोटी चीज़े हैं ये तो यहाँ ही गिर जाएँगी। आपके अन्दर स्वयं स्वयंभू की शक्ती है। इतनी शक्ती है आपके अन्दर, जिसको अभी आपने उपयोग में ही नहीं लाया। सहजयोग की बाते करेंगे इधर उधर, गप्पे मारेंगे। कुछ लोग सोचते हैं कि हम सहजयोगी हो गए तो बड़े ऊँचे आदमी हो गए। सहजयोगी के बहुत से लक्षण हैं।

उसका पहला लक्षण ये है कि और लोगों से घुल मिलाना। वो जानता है कि मैं उजाला ही हूँ, मुझसे जो लोग हैं उनसे मैंने जाना। वो निरालापन है इसलिए मैं बहुत ही ज़्यादा नम्र हूँ। और मुझे इन लोगों पर दया आती है कि क्या ये लोग सब नर्क में जाएँगे? इनका क्या हाल होने वाला है। मेरा इनका रिश्ता सिर्फ इस दुनिया का है। और अगर इनके अकल नहीं आई तो इनका मैं कुछ नहीं कर सकता। जाने दो इनको। ये सब जाएँगे। इस तरह से एक बहुत सूझबूझ, समझ रखने वाला इन्सान सहजयोगी कहा जा सकता है। जो किसी भी चीज में ममत्व में छुटा हुआ हो। मेरी बीवी, मेरे बच्चे, मेरी माता, मेरे पिता, मेरा घर, इत्यादि। "मेरा" "मेरा"।। मैं कहूँगी ये मेरा शरीर है, ये मेरी बुध्दि है, ये मेरा अहंकार है, ये मेरा मूँह है। मेरा है ना, तो "मैं" कौन हूँ। उस "मैं" को जानना है और वो "मैं" कौन हूँ? वो "मैं" ही आत्मा हूँ। जब तक आप "मैं" पर नहीं पहुँचते तब तक "मेरा" "मेरा" चलते रहेगा। ये ममत्व से छुटना चाहिए। जिसका अभी छुटा नहीं वो अब तक सहजयोगी नहीं हुआ। वो सहज में आएँ है, लेकिन अभी ऐसे वैसे हैं।

दूसरी बात है कि उसका विश्वास अपने अन्दूणी धर्म पर है, बाहर पर नहीं। बाहय के किसी भी धर्म को नहीं मानता। सब बेकार की बाहय की चीज़ से बिल्कुल छुटा हुआ है। अन्दूणी अपने धर्म को मानता है जो असली धर्म है। पूरी तरह से वो उसी धर्म में बैठा हुआ है। वो हर तरह से नम्र है किसी को दुखाता नहीं। किसी को तकलीफ नहीं देता। किसी को परेशान नहीं करता। किसी के साथ ज़्यादती भी नहीं करता।

वो सत्य बोलता है। और जहाँ नहीं बोलना, वहाँ नही बोलता। हर समय बोलते ही नहीं रहता। दुसरों की चीज़े नही लेता, उनकी तरफ नजर नहीं रखता है वो मस्ती में रहता है। जो मिला सो मिला, जो नही मिला सो नहीं मिला। आराम से बैठा है। आज जन्मदिन के लिए ये नही कहना चाहिए, लेकिन मैंने सोचा बीस साल हो गए हैं, आज बताना चाहिए कि असली हीरा कैसे बनता है।

दुसरा ये, कि वो कायदे में रहता है। बिना कायदे काम नहीं करता। मैंने पति पत्नी में रोज़ झगड़ा होते देखा कि तुम सहजयोगी नहीं हो। ऐसे नहीं हो, वैसे नहीं हो। नहीं है तो नही है। लड़ने से क्या फायदा। नही हैं तो रहनें दो। लड़ाई नहीं करता किसीसे। उसकी लड़ाई जो है, उसकी शक्ती है। उसका प्यार है। आप अगर लड़ाई करना बन्द कर दें, तो पचासों काम हो सकते हैं। दुसरों से लड़ना, दुसरोंसे क्रोध करना, ये सब सहजयोगी नही करते। वे अपनी शान्ती में खड़े रहते हैं। जैसे की एक चीनी राजाने अपने दो मुर्गे लड़ाईमें ट्रेन होने के लिए एक साधु के पास छोड़ दिए। उन्हे वहाँ ट्रेनिंग मिली। उसके बाद राजा जब उन्हें लेकर लड़ाई के आँगन में उतरा, जहाँ बहुतसे मुर्गे थे। सारे मुर्गे एक दुसरोंको मारने लगे ये दोनो अपने आरामसे बैठे रहे। उनकी शान्ती देखकर के बाकी के मुर्गे ठंडे हो गए। जितने मुर्गे थे वे सब भाग गए। तो ऐसा इन्सान अत्यंत शान्ती का पुतला होता है। हर जगह जहाँ कोई तकलीफ हो, परेशानी हो, उसकी शान्ती एकदम प्रबल हो जाती है। उसका एकदम प्रकाश फैलने लग जाता है। जब कोई आफ़त आ गई या तकलीफ़ हो गई, एकदम शान्ती हो जाती है। और ऐसे आदमी का स्वरूप ही और हो जाता है। हर जगह लड़ाई करना, झगड़ा करना, हर जगह वादविवाद करना, ये सहजयोगीयोंका लक्षण नहीं। शान्ती पूर्वक रहना, शान्तीसे रहना। बहुत से लोगों में ये है की अगर कोई रेलगाड़ी या हवाइ जहाज से जाना है, बस आफ़त आ जाती है। आप परमचैतन्य के आसरे बैठे हुए हैं। वो सब कर रहा है। तो आप शान्त बैठो। देखते रहो। क्या हो रहा है। जैसे होना है वैसा ही होगा।

एक दुसरों से नफ़रत करना एक महापाप है सहजयोग में। आपको अगर किसी से नफरत करना है तो आप जाकर के उससे प्यार से बाते करिये। उसके लिए दो चार चीज़े आप तोफ़ा ले आईये। जो दुष्ट प्रवृत्तीया हैं, उसके लिए आप कह सकते हैं कि, नष्ट हो जाएँ। दुष्ट लोग की नष्टता ठीक है। लेकिन सहजयोगीयों का सहजयोगीयों में प्यार नहीं, ऐसा मैं सोच भी नहीं सकती। कितना प्यार होना चाहिए। आपके जैसा और है कौन। आप ही तो सब एक दुसरे के भाई बहन हैं। ऐसे जब बाहर के देश से लोग आते हैं तो आप लोग उनसे मिलते नहीं, दोस्ती नहीं करते। सब अपने बाल बच्चों को देखते रहते हैं। कोई बात नहीं करता। अलग अलग रहते हैं। अलग बैठते हैं। और प्यार में तो भाषा की कोई ज़रूरत नहीं। सो सारे विश्व में भी आप सबके भाई बहन हैं, उनसे मिलना भी एक तरह का आदर, प्यार, एक अनोखी चीज़ सी है। आप लागों को उनको चिठ्ठी लिखना चाहिए। उनके फोटो होने चाहिए। बच्चों के नाम आने चाहिए। जानना चाहिए, सब लोग कौन है, कहाँ है। आपसी प्यार खुद बड़ी चीज है, एक बड़ी संग शक्ती हैं। इसके

आगे कोई नहीं झुक सकता। सहजयोग सिर्फ़ प्यार की शक्ती है, और कोई इसकी शक्ती नहीं। प्यार की शक्ती इतनी ज़बरदस्त है कि वो सारी शक्तियों को काट देती है। चालीस देश में हम लोग काम कर रहें हैं। चालीस देश में हमारे भाई बहन हैं। ऐसा कभी हुआ है? जो एक दुसरों की परवाह करें। जो एक दुसरे को माने। जो सहजयोगी होता है वो अत्यन्त चरित्रवान होता है। उसके लिए जो स्त्री, पुरुष, बेकार की माया मोह हैं, ये छुते ही नहीं हैं। वो एकदम पूरी तरह से निष्काम हो जाता है। कोई औरत है। कोई आदमी हैं। उनके आपसी सम्बन्ध, ये सब फालतु की चीजें, जो कि कचरा था, उस कचरे से निकलकर, एक शुद्ध आत्मा स्वरूप हो जाता है ऐसी आत्मा कितनी ज़बरदस्त शक्ती होती है। अपने शुध्दता में उतरना चाहिए। शुध्दता में उतरने का मतलब ये नहीं कि आप अशान्त हों। जो आदमी शुध्द होता है वो कभी अशान्त हो ही नहीं सकता। जो चीज़ सब चीज़ को शुध्द करती है वो कैसे अशान्त हो। लेकिन शुध्दता के साथ लोग बहुत ज़बरदस्त ज़ालिम लोग हो जाते हैं। कि हम तो ऐसे हैं, हम वैसे हैं, हम बहुत अच्छे हैं। हम में बड़ा डिसिप्लिन (नियम अनुसार) है। हम सहजयोगी हैं और बाकी तो सब खराब। ऐसा कभी नहीं सोचना चाहिए। सहजयोगी सोचता है कि सब मेरे ही तो अपने हैं। जो शुध्द चीज़ होगी तभी तो उस में सब चीज़ समा सकेगी। हर बार झूठ बोलना, इधर से उधर लगाना, ये सब बहुत अशुध्द बातें हैं। ओछी बातें है। ये सब बातें करना ही सहजयोग में अमानीय है। और किसी के पीछे बात करना, इधर उधर की बात करना और दो दो पैसे के लिए परेशान होना। अरे, सारी लक्ष्मी आपके पैरों के नीचे है। आपको क्या इतने पैसों से परेशानी। चार पैसे अगर कह दीये, सहजयोग के लिए दे दो तो मार आफत आ जाती है। आखिर सहजयोग के लिए आप कितना पैसा दिया, ज़रा सोच कर देखिए। इससे ज्यादा तो आप अपना तेल इस्तेमाल करते हैं। सहजयोग में कोई खरचा खास होता नहीं है। इसका मतलब नहीं कि अगर ज़रूरत पड़े तो आप लोग पैसे नहीं देंगें यहाँ तो जान देने के लिए तैयार होना चाहिए, कि आप सहजयोगी हैं।

आज जन्म दिन के रोज आप लोगों से यही कहना है कि आप लोग सब बढ़िये मेरे साथ। उम्र में बढ़ना चाहिए। इसका मतलब है कि मनुष्यता आनी चाहिए। एकाग्रता है सो बात ठीक है। लेकिन एकाग्रता का मतलब है, कि जिस तरह से आपके अन्दर अनेक चक्र हैं, उसमें से एक भी कुण्डलीनी का जिसे जागृत कहें। इसी तरह एक चक्र पकड़ता है। दूसरे का दूसरा पकड़ता है। तीसरे का कोई और चक्र पकड़ता है सो इस कुण्डलिनी का जागरण और उसका सारे चक्रों में से गुज़र जाना और फिर सहस्त्रार में लीन हो जाना कितनी महान चीज हैं। वो किसी साधु, सन्यासी, महाऋषी, योगी, अवतरण किसी ने तो भी नहीं किये काम, जो आप लोग कर रहे हैं। इतनी शक्ती आपके अन्दर आ गई लेकिन वो सब शक्ती को बरदाश्त करने के लिए हमारे अन्दर उतना ही सहनता होनी चाहिए। वोलटेज जितना हम बरदाश्त करते हैं, उतना वोल्टेज हमारे अन्दर आ सकता हैं। लेकिन ये वोल्टेज हम बहुत बढ़ा सकते हैं। बहुत ज़्यादा। और ये सब

ने तो विशेष रूप धारण किया है। इसीलिए मैंने सारी बातें कह दी हैं आप के सामने, कि किस तरह से हम लोग अपने अन्दर और बाहर अपने जीवन को प्रफुल्ल कर सकते हैं।

ध्यान धारणा से अन्दर की सफाई हो जाती है। उसमें ये पगलपन नही है, कि मैंने सवेरे नहाया नहीं। मैंने चार बजे उठना था, पर मैं साढ़े चार बजे उठा। तो क्या हुआ। इस तरह की बात नही है। बाहय के कोई आवरण नहीं हैं। पर ध्यान करना चाहिए। हर समय ध्यान में ही रहना चाहिए। अपनी स्थिती ध्यान में कितनी देर है। कोई भी चीज़ आपको गड़बड़ में डाले, तभी ध्यान में जाना चाहिए। ध्यान में जाने का मतलब क्या है? आपका सम्बन्ध इस परम चैतन्य से हो गया। जिस समय आप ध्यान में गए, परम चैतन्य से आपने एकाकारिता स्थापित कर दिया। कितनी देर हम ध्यान में रह सकते हैं। कोई विचार आए। नहीं चाहिए। ध्यान ।। कोई एक स्थिती, एक व्यक्तित्व है, और उसके बाद जो प्रकाश है उसे लेकरके हमें खोजना है लागों को। उनसे बाते करना हैं। उन्हें प्रकाश देना है। पर जब आप लोगों से मिलते हैं, वो आपकी प्रकाश की ओर नज़र करेगा, वो देखेगा कि आपमें वाके प्रकाश है कि आप ऐसे ही झूठा दिलासा लेकर घूम रहें हैं। उस वक्त जो भी है, वो आपके चरित्र को देखेगा। आपके व्यक्तित्व को देखेगा। आप में क्या बात है, उसको जानेगा। आपने क्या पाया हैं, उसे देखेगा। और आपमें से बहुत ऊँचे ऊँचे लोग निकलकर के चारों देश का, सारे दुनिया का उद्धार कर सकतें हैं।

कोई चीज की चिन्ता करनी सहजयोग में माननीय नहीं। क्योंकि सारी चिन्ता परम चैतन्य करता हैं। हमें सिर्फ़ एक ही चिन्ता होनी चाहिए, कि मैं ध्यान में रहूँ। आनन्द में कभी कमी नहीं आने पाए। और हमेशा मौज मे रहो। आपकी भक्ती, सेवा, प्यार देखकर के बहुत खुशी होती है। लेकिन कुछ अपनी भी सेवा करिये। अपना भी विचार रखिये। अपनी भी कोई सजावट हो। अपना भी ख्याल किया जाए। कि आप एक हीरा हैं। उसें पूरी तरह से तलाश करिये। कि जिसका कोई भेदी होना चाहिए। सब विश्व के लोग हैं, विश्व निर्मला धर्म में उतरे हुए हैं। हम अलग अलग देश में रहते हैं, लेकिन हम हैं एक ही देश के रहने वाले। वो है परमात्मा का सामरास्य और उसमें आनन्द और उल्लास से रह रहें हैं। और सबको हम अल्हाद दे रहे हैं। कितनी बड़ी चीज़ है। जैसे कि एक वाटिका में फूल हैं। जिन्हे देखकर के बडे बडे लेखकों में स्फुर्ती आ जाए। इन को देखकर के सब खुश हो जाएँ। ऐसे लोग आप हैं। ऐसे ही फलों की मुझे आशा हैं। मैं चाहती हूँ कि आप कोई विशेष सब लोग कार्य करें। हर एक गाँव में, देहात में, जहाँ आपसे बन पड़ता है। एक दिन ऐसा आएगा कि बहुत से लोग सहज योगी नज़र आने लग जाएँगे हर जगह।

आशा है आप लोग आज मेरे जन्म दिन पर एक निश्चय करें। नम्रता पूर्वक, कि हम माँ इस साल सौ आदमी पार कराएँगे। कम से कम हर आदमी कोशिश करें। हो सकता हैं। हर तरह से। लोगों को खाने पर बुलाइये। लोगों को चाय पानी पर बुलाईये, लोगों से बात चीत करिये, कि वो सहजयोग करें। कितने चमत्कार हैं, सहजयोग में। उन्हें चमत्कार आप बताईये। अब सबसे बड़ा चमत्कार हो गया है, ... है कि

अब हमने "अॅडस" भी ठीक कर दी। कैन्सर ठीक हो जाएगा। अभी भी बहुतों को ये ही मालूम नही कि कौनसी उँगली पर कौन सा चक्र है। पर फिर भी आप सब लोग अेडस ठीक कर सकते हैं। मानसिक तकलीफे ठीक कर सकते हैं। सबको जागृती दे सकते हैं। और आपको अभी तक ये नहीं मालूम कि कौन सा चक्र कहाँ पकड रहा है। तो इसका ज्ञान होना चाहिए। हर एक को, चाहे स्त्री हो या पुरूष हो। पुरूषों से ज्ञान लो और औरतों से उसकी वाईब्रेशन लो। उसकी सुझ बूझ लो। उसकी जो प्रगह होती है वो औरतों मे ज्यादा होती है। पुरूषों में बुद्धि का ज्ञान होता है और औरतों में हृदय का ज्ञान होता है। दोनो चीज़ सामान्य से आनी चाहिए। जितना हो सकता है करना चाहिए। इस साल में खासकर मेहनत करना चाहिए। आपको जैसा आनन्द होता है ऐसे सारी दुनिया हो जाए। तो कार्य बहुत जोरों से हो सकता हैं। और हम लोग कुछ पा सकते हैं।

सबको मेरा आनन्त आशीर्वाद

卐

जन्मदिन का भाषण, दिल्ली 30-3-9

आज नवरात्री की चतुर्ती है। और नवरात्री में रात्री को पूजा होनी चाहीए। अन्धकार को दूर करने के लिए अत्यावश्यक है की प्रकाश को हम रात्री में ही ले आऐं। आज के दिन का एक और संजोग है कि आप लोग हमारा जन्म दिन मना रहें हैं। आज के दिन गौरीजी ने अपने विवाह के उपरान्त श्री गणेश की स्थापना की। श्री गणेश पावित्र का स्तोत है। सबसे पहले इस संसार में पवित्रता फैलाई गई। जिससे कि जो भी प्राणी, जो भी मनुष्य मात्र इस संसार में आए वो पावित्र से सुरक्षित रहें, और अपवित्र चीजों से दूर रहें। इसलिए सारी सृष्टी को गौरी जी ने पवित्रता से नहला दिया। और उसके बाद ही सारी सृष्टी की रचना हुई। सो जीवन में सबसे महत्वपूर्ण कार्य हमारे लिए ये है कि हम अपने अन्दर पावित्र को सबसे ऊंची चीज समझें। लेकिन पावित्र का मतलय ये नहीं कि हम नहायें, धोयें, सफाई करें, अपने शरीर को ठीक करें। किन्तु अपने हृदय को स्वच्छ करना चाहिए। हृदय का सबसे बडा विकार है कोध। और जब मनुष्य में कोध आ जाता है तो जो पवित्र है वो नष्ट हो जाता है। क्युकि पवित्र का दूसरा ही नाम निर्व्याज प्रेम है। वो प्रेम जो सतत बहता है, और कुछ भी नहीं चाहता। उसकी तृप्ति इसी में है कि वो बह रहा है और जब नहीं बहता तो वो परेशान होता है। सो पावित्र का मतलब ये है कि आप अपने हृदय में प्रेम को भरें। कोध को नहीं। कोध हमारा शत्रु हैं लेकिन वो संसार का शत्रु है। दुनिया में जितने भी युध्द हुए हैं, जो जो हानियाँ हुई है ये सामुहिक कोध के कारण हैं। कोध के लिए बहाने बहुत होते हैं। लेकिन युध्द जैसी भयंकर चीज भी कोध से ही आती हैं। उसके मूल में यै कोध होता है। गर हृदय में प्रेम हो तो कोध नहीं आ सकता, और गर कोध का दिखावा भी होगा तो वो भी प्रेम के ही लिए। किसी दुष्ट राक्षस

को जब संवार किया जाता है, वो भी उसपे प्रेम करने से ही होता है। क्योंकि ये इसी योग्य है कि उसका संहार हो जाए जिससे वो और पाप कर्म करे। लेकिन ये कार्य मनुष्य के लिए नहीं है, ये तो देवी का कार्य है जो उन्होंने इन नवरात्रीयों में किया।

सो हृदय को विशाल करके हृदय में ये सोचें कि हम किससे ऐसा प्रेम करते हैं जो निर्वाज्य, निर्मम है जिसके प्रति, हम में नहीं कि ये मेरा बेटा, मेरी बहन है, मेरा घर, मेरी चीज। मनुष्य की जो स्थिती है आप उससे बहुत उँची स्थिती में आ गए हैं। क्योंकि आप सहजयोगी हैं। आप का योग परमेश्वर की इस प्रेम की सूक्ष्म शक्ति से हो गया। वो शक्ति आपके अन्दर अविरल बह रही है, आप को प्लावित कर रही है। आप को संभाल रही है। आप को उठा रही है। बार बार आपको प्रेरित करती है। और आपको आल्लाहद और मधुमय प्रेमसे भर देती है। ऐसे सुन्दर शक्ती से आपका योग हो गया। किन्तु अभी हमारे हृदय में उसके लिए कितना स्थान है ये देखना होगा। हमारे हृदय में माँ के प्रति तो प्रेम है, और उस प्यार के कारण आप लोग बहुत आनन्द में है। किन्तु और भी दो प्रकार का प्रेम होना चाहिए, तभी माँ का पूरा प्यार हो सकता है।

एक प्यार अपने से हो कि हम सहजयोगी हैं। हमने सहज में शक्ति प्राप्त की, लेकिन अब हमें इसे किस तरह से बढाना चाहीए। बहुत से लोग सहजयोग के प्रसार के लिए बहूत कार्य करते है। हॉरिझॉन्टल मुव्हमेन्ट पृथ्वी से समान चारों तरह फैलता हो। वो लोग अपनी ओर नजर नहीं करते। तो जो व्हर्टिकल मुव्हमेन्ट है उत्थान की गति को नहीं प्राप्त होती। बाहय में वो बहुत कुछ कर सकते हैं। बाहय में दौडेंगे, काम करेंगे, सबसे मिलेंगे, लेकिन अन्दर की शक्ती को नहीं बढाते। बहुत से लोग हैं, अन्दर के शक्ती के तरफ बहुत ध्यान देते हैं और बाहय के शक्ती की तरफ नहीं। तो उनमें सन्तुलन नहीं आ पाता, और जब लोग सिर्फ बाहय के तरफ बढाने लग जाते हैं तो उनकी अन्दर की शक्ती क्षिन्न होने लगती है। ऐसे होते होते ऐसे कदार पे पहँच जाते हैं कि फौरन अहंकार में ही डूबने लगते हैं कि हमने इतना सहजयोग का कार्य किया है। इतनी महनत की है। और फिर ऐसे लोगों का एक नया जीवन शुरु हो जाता है जो कि सहजयोग के लिए बिल्कुल उपयुक्त नहीं। वो अपने को सोचने लगते हैं कि हमारा बहुत महत्व होना चाहिए। (सेल्फ इंपॉर्टन्स)। हर चीज में वो अपना महत्व दिखाऐंगे अपनी विशेषता दिखाऐंगे। अपने को सामने करेंगे। लेकिन अन्दर से खोखलापन आ गया है। फिर उनको कोई बिमारी हो गई, पगला गए, कुछ बडी भारी आफत आ गई। तो फिर कहते हैं कि "माँ हमने तो पूरी तरह से आपको समर्पित किया हुआ था। फिर ये कैसे हो गया।" इसकी, जिम्मेदारी आप ही के ऊपर है कि आप बहकते चले गए। फिर ऐसा आदमी एक तरफ हो जाता है। वो दूसरों से सम्बन्ध नहीं कर पाता है। उनका सम्बन्ध सिर्फ लागों पर रोब झाडने का हो जाता है। और अपने आपको ऊंचा दिखाना। सबसे आगे आना चाहिए, सबमें उनका महत्व होना चाहिए। तो फिर ऐसा भी होगा कि वो भूल जाऐंगे कि कुछ करने का है। माँ के लिए भी कुछ दान देना

है। मैंने देखा कि राहूरी, बम्बई में भी कुछ तरह से ऐसे लोग एक दम से उभरकर ऊपर आ गए। औ वो अपने को बहुत महत्वपूर्ण समझने लगे। फिर न वहां आरती होती थी। न फोटो पोंछते थे। नसीब अपने फोटो नहीं लगाए। अपनी डींग मार मार करके किसी से कुछ पूछना नहीं, हम करेंगे। फिर झगा शुरू हो गए। ग्रुप्स बन गए। क्यूंकि जिस सूत्रमें आप बन्धे हुए हैं वो आपके माँ का सूत्र है। और उसी सूत्र आप बँधे रहें और पूरी समय ये जानते रहें कि हम एक ही माँके बच्चे हैं। न हममें कोई ऊँच न नीचा नहीं, हम कोई कार्य करते हैं, और ये चैतन्य ही सारा कार्य करता है। हम कुछ करते ही नहीं हैं। ये भावन ही जब छूट गई कि हम बडे है इमने ये किया, हम वो करेंगे। तब फिर चैतन्य कहता है तुझे जो करना कर, जहाँ जाना है जा। चाहे नर्क में जा, चाहे अपने को मिटा ले। अपना सर्वनाश कर ले। वो आपको रोकेग नही क्युंकि आपकी स्वतंत्रता वो मानता है। आप स्वर्ग में जाना चाहें तो उसकी भी व्यवस्था है।

पर सहजयोग में एक और बडा दोष है। हम एक सामूहिक विराट शक्ति हैं। हम अकेले अकेले नहीं है। सब एक ही शरीर के अंग प्रत्यंग हैं। उसमें अगर एक इन्सान ऐसा हो जाए, या दो चार ऐसे हो जाऐं जो अपना अपना ग्रुप बना लें तो जैसे कैन्सर की मैलिगन्सी होती है की एक सैल ही बढने लगता है, अलग से। तो ऐसे ही एक आदमी बढ करके सारे सहजयोग को ग्रस सकता है। और हमारी सारी महनत व्यर्थ जाती है।

हमको तो चाहिए कि समुद्र से सीखें कि जो सबसे नीचे है, सब नदीयों को अपने अन्दर समाता है और अपने को तपा करके, भाप बनाकर के सारी दुनिया में बरसात की सौगात भेजता है। उसकी जो नम्रता है वोही उसकी गहराई का लक्षण है। और फिर वोही बरसात नदियों में दौडती हुई उसी समुद्र की ओर जाती है। जब हमारे अन्दर अत्यन्त नम्रता व प्रेम आ जाएगी तब ही इस समुद्र की तरह हम विशाल हो जाऐंगे। लेकिन अपना ही महत्व करना, अपने ही को विशेष समझना। फिर इससें सबसे बडी खराबी ये है की परम चैतन्य आपको काट देगा कि जाओ। फिर आप एक तरफ फिक जाऐंगे जो मेरे लिए बहुत दुखदाई बात होती है। ऐसे लोग जो सोचते हैं कि हमने ये कार्य किया वो कार्य किया, उन्हें फौरन पीछे हटकर के देखना चाहीए कि हम ध्यान करते हैं? हम कितने गहरे हैं? हम किस किसको प्यार करते हैं। कितनों को प्यार करते हैं। और कितनों से दुश्मनी। सहजयोग में कोई लोग बड़ें गहरे बैठ गए हैं। और बहुत से अभी भी किनारे पे ही डोल रहे हैं और कब वो फिक जाऐंगे कह नही सकते।

मैंने आपसे पहले ही बताया है कि 1990 साल के बाद एक नया आयाम खुलने वाला है। और एक छलाँग आपको मारनी होगी। जो आप उस मोहाल से उतर करके उस नई चीज को पकड लें। इसमें टिकने के लिए पहली चीज़ हमारे अन्दर पवित्र होना चाहिए, जो नम्रता से भरा हो। अगर आप एकदम स्वच्छ हैं,और पवित्र हैं तो आपको किसी को भी छूने में, किसी से भी बात करने में कभी अपवित्रता नहीं आएगी , क्योंकि आप हर चीज को ही शुध्द करते हैं। आपका स्वभाव ही शुध्द करने का है। तो आप जिससे

मिलेंगे उसी को आप शुध्द करते जाऐंगे। उसमें डरने की कौनसी बात है। उसमें किसी को कंडम करने की कौन सी बात है। फिर तो आपकी पवित्रता कम है। गर आपकी पवित्रता सम्पूर्ण है तो वो पवित्रता में भी शक्ति और तेज है और वो इतना शक्तिशाली है कि कोई सी भी अपवित्रता को खीच सकता है। जैसे हर तरह की चीज पूरी तरह से समुद्र में एकाकार हो जाती है।

अब दूसरे लोग हैं जो सिर्फ अपनी ही प्रगति की सोचते है। वो ये सोचते हैं कि हमें दूसरे से क्या मतलब। हम अपने कमरे में बैठकर माँ की पूजा करते हैं, उनको हम मानते है और हमें दुनिया से कोई मतलब नहीं। और दुसरों से कटे रहते हैं। क्यूँकि आप शरीर के एक अंग प्रतयंग हैं। फिर आप कहेंगे कि माँ मैं तो इतनी पूजा करता हूँ इतने मंत्र बोलता हूँ, मैं तो इतना कार्य करता हूँ। फिर मेरा हाल ऐसा क्यूँ? क्यूँकि आप उस सामूहिक शक्ति से हट गए। सहजयोग सामूहिक शक्ति है। सो दोनों चीज के तरफ ध्यान देना है कि हम अपनी शक्ति को भी सम्भालें और सामूहिकता में रचते जाऐं। तभी आपके अन्दर पूरा संतुलन आ जाएगा। मैने ऐसे लोग देखें हैं जिन्होंने सहजयोग के लिए बहुत कार्य किया। वे काफी अच्छे भाषण देते थे,बोलते थे। और अपने भाषणों की टेप बना ली। फिर लोगोंसे कहने लगे कि आप हमारी टेप सुनो। तो लोग हमारी टेप छोड़के उन्ही की टेप सुनने लगे। और उनका ये हाल था कि वो हमारें फोटो को तो नमस्कार करेंगे, हमे नही करेंगे। क्यूँकि उनको फोटो कि आदत पड़ी थी। ऐसे विक्षिप्त लोग हमने देखें हैं। फिर उन्होंने अपने फोटो छपाए, और फोटो सबको दिखा रहें हैं। इस तरीके से वो अपना ही महत्व बढाते हैं। करते करते ऐसे गढे में गिर गए। और फिर छूट गए सहजयोग से। ऐसे लोग क्यूँ निकल गए, क्यूँकि संतुलन नहीं। और जब संतुलन नही रहता तो आदमी या तो लेप्ट या राईट में चला जाता है।

दो तरह की शक्तियाँ हमारे अन्दर हैं, जिससे की हम सहजयोग की ओर खिचते भी हैं और दूसरी शक्ति जिससे हम बाहर फेंके जाते हैं। तो फिर लोग कम हो गए, तो इसमें सहजयोग का नुकसान तो हूआ नहीं। इसमें उनका ही नुकसान हुआ। अगर आपको फायदा कर लेना है तो इस चीज को जान लीजिए कि सहजयोग को आपकी जरूरत नहीं है। आपको सहजयोग की जरूरत है।

योग का दूसरा अर्थ होता है युक्ति। एक तो है कि सम्बन्ध जुड़ जाना, लेकिन दूसरा है युक्ति।

पहली तो युक्ति ये है कि हमें इसका ज्ञान आ जाना चाहिए। ज्ञान का मतबल बुध्दी नहीं। व्यक्ति तो हमारे उँगलीयों में हाथों में। अन्दर कुण्डलीनी की पूर्णतय जागरण होना ये ज्ञान है। फिर और भी ज्ञान होने लगते हैं। इस ज्ञान के द्वारा आप लोगों की कुण्डलीनी भी जागृत कर सकते हैं। और उनको समझा भी सकते हैं, और उनसे पूरी तरह से आप एकाग्र हो सकते हैं। उनके साथ आप वार्तालाप कर सकते हैं। तो आपको बौद्धिक ज्ञान भी उससे आ जाता है। आप सहजयोग समझते हैं, नहीं तो कोई समझ सकता था पहले। कबीर, नानकजी की बात कोई समझता था? या ज्ञानेश्वर की बात समझी? तो आपका बुद्धि चातुर्य

दूसरी युक्ति क्या है? वो है कि जो आप हमारे प्रति भक्ति करें। उस भक्ती को भी जब आप कर हैं तब आप अनन्य भक्ती करते हैं। आप हमसे तदाकारी में जुड जाते हैं। जैसे हम सोचते हैं ऐसा आप सोचने लग जाते हैं। आज देर हो गई तो हम भी ये कह सकते हैं की हम बहुत थक गए हम बसका नहीं, लेकिन हमने सोचा नवरात्री है तो रात को ही करना चाहिए और यही मूहूरत हमको मिलना वो हमको करना ही है और बडे आनन्द से हम कर रहे हैं। उसके बारे में हम सोचते भी नहीं कि ह थक गए, हमने आराम नहीं किया। और आपको भी ऐसा सोचना चाहिए कि यही समय माँ ने बांधा है क्योंकि यही समय हमारे लिए उचित है। पूजा के लिए। लेकिन आधे अधूरे लोग उल्टी बाते सोचेंगे। ह सुबह से बैठे है, हमें भूख लग गई। बच्चे सों रहे होंगे। तो वो अनन्य भक्ती नहीं है क्योंकि मेरा जो से विचार है वो आपके सोच विचार में नही है। किसी के लिए मैं सोचती हूँ, तो माँ ये इतना खराब है ऐसा है। मैं कहती हूँ जी नहीं बिल्कूल अच्छा है। मैं सोचती हूँ मैं जो देख रही हूँ ये क्यूं नही देख रहे तो अनन्य नही हुआ, अन्य हो गया, दूसरा हो गया।

इसी प्रकार जैसे हमारा प्यार आप के प्रति है, तो आप भी सबके प्रति वैसा ही प्यार रखें। अग ये बात आपके अन्दर नहीं तो ये अन्य है। अनन्य नहीं। गर हमारे ही शरीर के अंग प्रत्यंग है तो उ हम है ऐसे ही उनको होना चाहिए। जैसे हम सोचते हैं वैसा ही आपको सोचना चाहिए। तो ये दुसरा स सोचते हैं, ये उल्टी बात क्यूँ सोचते हैं। यही प्रेम का स्तोत है कि जो कूपँ में है वोही घट में आना चाहिए दूसरी चीज कैसे आ सकती है। और कोई दूसरी चीज आती है तो मै सोचती हूँ की इन्होंने कोई और क से पानी भरा है। ये घट मेरा नहीं।

जब दूसरी बात की माँ हम आपमें शरणागत हैं। जब शरणागत हैं,तो फिर हम आपको कुछ कह भी दें या कोई चीज समझा दें, या कोई आपके सामने प्रस्ताव रखें, कुछ रखें, तो उसको मना करने का सवा ही कैसे उठेगा। पर आप और हम एक हो गए, तो उसका सवाल ही कैसे उठना चाहिए। माँ ने कह दिया स कह दिया। हम तो माँ ही हो गए हैं, हम नहीं कैसे कर सकते हैं। तब आप में ये तदाकारी नहीं आई सो दूसरी युक्ति है कि माँ मेरे हृदय में आप आओ। मेरे दिमाग में आप आओ, मेरे विचारों में आप आओ मेरे जीवन के हर कण में आप आओ। आप जहाँ भी कहोगे हम हाजिर हैं हाथ जोडकर। पर आप व कहना तो पडेगा न, और पूर्ण हृदय से। किसी मतलब से नहीं।

तीसरी बात - हम ये काम कर रहे हैं हमने सहजयोग का ये काम किया, हमने ये सजावट की ठीक ठाक किया। मैने किया। तो सहजयोगी आप नहीं। सहजयोग में सारे आपके कर्म अकर्म हो जाने चाहिए जब आप बारीक सूक्ष्म में देखते जाऐं तो आप देखेंगे कि क्या मैं ऐसा सोचता हूँ, कि मैंने किया ऐसे मेरे दिमाग में बात आती ही क्यूँ है। इसका मतलब मेरा योग पूरा नही हुआ। जब योग पूरा ह जाता है तो आप अकर्म में उतर जाते हैं। जैसे की ये हो रहा है, वो हो रहा है, ऐसे आप बोलने ल जाते हैं। तब आप को पूरी तरह से तदाकारी प्राप्त हो गई।

तीसरी युक्ति है जिसको सीखना चाहिए कि जहाँ मैं कुछ नही कर रहा हूँ। मैं क्या कर रहा हूँ। जब तक आप अपना कार्य ढूंढ रहे थे, तब तक आप कुछ कर रहे थे क्योंकि आपके अन्दर अहम भाव था। जब आप सामुहिकत्ता में आ गए। तब आप कुछ भी नही कर रहे। आप अंग प्रत्यंग है और वो कार्य हो रहा है।

ये युक्तियाँ मैं इस लिए बता रही हैं कि जो झलांग जो लगानी है। इस तरह से आप अपना विवेचन हमेशा करें। और अपनी ओर नजर रखें। और देखें कि मैं क्या सोचता हूँ। मैं दूसरे के लिए सोचता हूँ। वो मुझसे श्रेष्ठ है, उससे मुझे सीखना चाहिए। उसके अच्छे गुण दिखाई देते हैं कि बुरे ही गुण दिखाई देते हैं। दूसरों के अच्छे गुण दिखाई दें और अपने बुरे गुण तो बहुत अच्छी बात हैं। इस युक्ति को समझ लेना चाहिए कि इसमें हम डावाँ डोल हैं तो अपने ही वजह से हैं। सहजयोग तो बहुत ही बड़ी चीज़ हैं। लेकिन हम में जो खराबी आ रही हैं या इसका मज़ा हम पूरी तरह से नही उठा पा रहे हैं इसकी वजह हममें कोई न कोई दोष है। इस युक्ति को अगर आपने ठीक किया तो सिर्फ आनन्द, मिलेगा। नीरानन्द। और कुछ नही। और फिर चाहिए क्या? आपकी शकल ही बदल जाएगी।

और आज इस जन्म दिवस पर मैं चाहूँगी कि आपका भी जन्म दिवस मनाया जाए, कि आज से हम इस युक्ति को समझें और अपने को इस पवित्रता से भर दें जैसें श्री गणेश। और पवित्रता से ही मनुष्य में सुबुध्दि आती है। क्यूँकि पवित्रता प्रेम ही का नाम है। और अगर आप सुबुध्दि को प्राप्त नहीं कर सकते, और प्रेम को आप अपना नही सकते तो सहजयोग में आने से अपना समय बरबाद करना है। इस वक्त ऐसा कुछ समय बन्य रहा है कि सबको इसमें सनात हो जाना चाहिए, और अपने को परिवर्तन में डालना ही है। परिवर्तित हमको होना ही है। हम में खराबियाँ ही हैं, हमें अपने को पूरी तरह से पवित्र बना देना है। इस परिवर्तन के फल स्वरूप आशीर्वाद है उस जीवन का जिसका वर्णन नही किया जा सकता। जो कबीर ने कहा - 'अब मस्त हुए फिर क्या बोले'। तो आप सब उस मस्ती में आ जाईए। उस को प्राप्त करें और उस आनन्द में आप आनन्दित हो जाएँ। ये हमारा आशीर्वाद है।

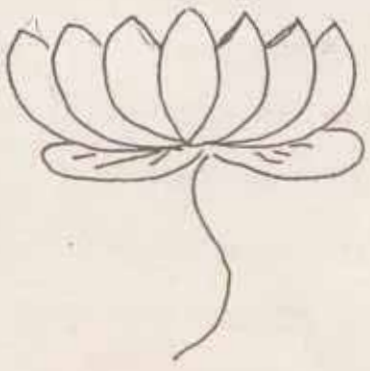

श्री माताजी प्रवचन
राम लीला मैदान दिल्ली 4·4·1990

हमें ये जान लेना चाहिए कि सत्य अपने जगह है। उसको हम अपनी बुध्दि से नहीं समझ सकते, न बना बिगाड सकते हैं। वो जैसा है वैसा ही है। मनुष्य अपने अहंकार में सोचता है कि वो परमात्मा का नाम लेकर, और जैसा चाहे उसे बनाये या बिगाड़े। अन्दर वो स्थिती नहीं आई हैं कि जिसने इस चारों तरफ फैली हुई चैतन्य की शक्ति और रूह को जाना है। इस शक्ति को महसूस करना सबसे बडा सत्य है। ये शक्ति संसार का सारा काम, सारा जीवित कार्य, संसार को हर तरह से व्यवस्थित रूप से रखने में कार्यान्वित रहती है। और इसका संतुलन, इसकी परवरिश करती है। इसी को रूह या चैतन्य कहा जाता है। या होली गोस्ट भी कहा जाता है। ये शक्ति स्थित है, यह पहला सत्य है। दूसरा सत्य ये है कि आप सवयं, ये शरीर, बुध्दि, अहंकार आदि ये कुछ नहीं है। आप सिर्फ शुध्द आत्मा हैं, जो कि इस शक्ति को जान सकता है और पूर्णतय इसको अपने अन्दर समा ले सकता है।

इस शक्ति को प्राप्त करना ही मनुष्य के उत्थान का अंतिम चरण है। और उसमें एकाकारिता मिल जाना यही एक योग है। आज आप एक अमीबा से इन्सान बन गए। अब इन्सान के बाद जो उसकी दुसरी दशा है उसमें मनुष्य को अब सन्त बनना है। माने उसको आत्म साक्षात्कार चाहिए। इसके सिवाय आप केवल सत्य को नहीं जान सकते। सब धर्मों में एक ही तत्व है, पर उसे समझने के लिए सबसे पहले हमें आत्म स्वरूप हो जाना चाहिए, क्युंकि ये आत्मा उसी परमात्मा का हमारे अन्दर प्रतिबिम्ब है। इसके घटित होते ही आपकी तन्दुरूस्ती अच्छी हो जाती है, सब से पहले। आप किसी भी धर्म में जाऐं, कुछ भी कर्मकाण्ड करें, किसी भी गुरू के पास जाऐं, जागृति बिना आपकी तन्दुरूस्ती अच्छी नहीं हो सकती। आप कोई सा भी विश्वास रखें, पूजा पाठ करें, मन्दिर, मस्जिद, गिरिजाघर या गुरूदारे जाऐं, तो भी आपके अन्दर शान्ती हमेशा के लिए नहीं आ सकती। और ये बुलाना, चीखना, चिल्लाना सब व्यर्थ है, जब तक मनुष्य का सम्बन्ध परमात्मा से नहीं हो जाता। जैसे टेलिफोन का कनैक्शन नहीं है और आप टेलिफोन पर बोले जा रहें हैं। परमात्मा तो आपको सुन नहीं रहा।

लोग प्रश्न ये करतें हैं कि क्या परमात्मा है कि नहीं। परमात्मा बिल्कुल हैं। लेकिन इस सत्य को जानने के लिए आपको आत्म साक्षातकारी होना चाहिए, वली होना चाहिए। क्युंकि इसके बिना न आप परमात्मा को और न इस परम चैतन्य को समझ सकते हैं। अभी एक सीडी मनुष्य को ऊपर जाना है। इस सीडी को लाँघते ही आप जान जाऐंगे कि इस सृष्टि में जितने भी मनुष्य हैं वे एक विराट के, अक्बर, के अंग प्रत्यंग हैं। और आपके अन्दर एक नया अध्याय आ जाता है। इसमें आप अपने नस नस में दूसरे आदमी को जान सकते हैं, और अपने को भी जान सकते हैं। ये सामूहिक चेतना है। आप हमेशा "मेरा" कहतें हैं

पर ये मैं कौन हूँ? इसे जब तक आपने जाना नहीं, जब तक आपने अपने अन्दर की आत्मा से अपना चित्त आलोकित किया नही, उसमें उसका प्रकाश आया नहीं, आप जो भी कार्य करतें हैं, वो अन्धेरे में करते हैं। इसीलिए कबीर ने कहा "कैसे समझाऊँ सब जग अन्धा"। समझने की बात है कि, सन्त, साधू, और वली जैसे निजामुदिन साहब, नानक, रामदास, बड़े बड़े सन्त हो गए। दूसरों से कहते थे कि तुम अच्छे रास्ते पर चलो। लेकिन दूसरे इस लिए नहीं चल पाते थे क्यूँकि उनके अन्दर आत्मा की शक्ति नहीं थी। जब आत्मा की शक्ति आ जाती है तो आपकी सारी गन्दी आदतें छूट जाती है, अपने आप ही। आपके अन्दर जो बसी हुई माँ कुण्डलिनी है जिसे असस भी कहते हैं,ये जब जागृत हो जाती है तो इस कुण्डलिनीके कारण आप एक दम स्वच्छ हो जाते हैं। और आपकी शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक की सफाई हो जाती है। सबसे बड़ी बात ये है कि आप केवल सत्य को जानते हैं।

इस तरह की चीज़ हुए बगैर न तो अपना देश ठीक हो सकता है और न ही सारा विश्व। विश्व में लोग शान्ती की बात करते हैं पर जिसके हृदय में शान्ती ही नहीं है, वो किस तरह से शान्ती को प्राप्त करेगा। अलग अलग शान्ती की संस्थाएँ बनाई गई हैं और दोनो आपस में लड़ रहे हैं। धर्म के नाम पर लड़ रहे हैं। क्यों? क्यूँकि हमने अब तक अपने अन्दर धर्म जागृत नहीं किया। सब का एक ही धर्म है और वो धर्म है इस परम शक्ति को अपने अन्दर प्राप्त कर लेना और उससे अपने को आलोकित कर लेना, सजा लेना। ये सजावट मनुष्य को बड़ा खूबसूरत बना देती है। उसका चरित्र सुन्दर हो जाता है। वो एक साक्षीस्वरूप हो जाता है। वो किसी चीज की लालच या किसी ओर गन्दी दृष्टि दे ही नहीं सकता। उसकी दृष्टि इतनी निर्मल हो जाती है, इतनी शुध्द हो जाती, कि ऐसी दृष्टि मनुष्य पे भी पड़ जाए, जिस घर पर पड़ जाए, जिस जगह वो पहँच जाए वो जगह ही पवित्र हो जाती है, और वहाँ सब शुभ हो जाता है। बहुत से लोग परदेस से मुझे कहते हैं कि माँ आपके देश में इतने धार्मिक लोग हैं पर फिर आपके देश में इतनी गरीबी क्यूँ हैं? वो इसलिए है कि किसी का भी सम्बन्ध परमात्मा से हुआ नहीं। जब परमात्मा का सम्बन्ध हो जाता है उसके अन्दर शक्तियाँ आ जाती हैं। सबसे बड़ी शक्ति आती है कि आप भी दूसरों को जागरण दे सकतें हैं। आप दुसरों को आत्म साक्षात्कारी बना सकते हैं। एक से हजार बना सकते हैं।

उसका विशेष परिवर्तन हो जाता है। गुस्से व झगड़ालु लोग भी एकदम शान्त हो जाते हैं। विचलित इन्सान, या कोई दुखी है तकलीफ में है, उसकी सारी व्यथाएँ नष्ट हो जाती हैं, और वो आनन्द के सागर में डूब जाता है। ऐसा इन्सान न आतातायी होता है न किसी पर ज़बरदस्ती करता है। वो तो सब को ठीक कर सकता है। इस तरह का व्यक्तित्व सारे संसार में तैयार हो सकता है क्यूँकि कलयुग अब खत्म होके कृतयुग शुरू हो गया है। इस कृतयुग में परमचैतन्य कार्यान्वित है। उसके कार्य के कारण हजारों लोग अब पार हो जाएँगे, जो आएँगे और चाहेंगे कि उन्हें जागृति हो।

हर देश में साधु सन्त हो गए हैं। नहीं तो पहले एक या दो थे। सबको सताया गया था। श्री कृष्ण, श्री राम, मुहम्मद साहब, सौक्रेटीस, लाऊसे को सताया। और सारे सन्तों को छल छल के सताया क्योंकि वे अकेले थे। पर अब वो सामुहिकता में आ गए हैं। अब कृतयुग में सारे सन्तों का रक्षण होगा, और उन्हें कोई नहीं सता सकता। और जो सताने का प्रयत्न करेगा उसपर कृतयुग का जरूर दण्ड आएगा।

अगर आपको अपना हित चाहिए, आप अपना भला चाहते हैं, वास्तविक में आप अपनी तन्दुरस्ती ठीक करना चाहतें हैं, अपनी हालत व हालात ठीक करना चाहते हैं तो क्यूँ न अपने को पा लिजिए जो आप हैं। क्यूँ इस अन्धकार में आप बेकार के झगड़े खड़े हुए किये हैं। आपके हर एक के अन्दर शक्ति है। ये आप सब की माँ है, जो आपको पुर्नजन्म देने के लिए आई है। और जो चाहती है कि आप इसे प्राप्त करो। सारे धर्मों का यही एक सार है कि तुम इस परम को पाओ। अगर आपने परम को नहीं पाया, तो सारा जीवन व्यर्थ गया। हम लोग उस चीज़ को प्राप्त कर लें जिसकी आज सारे संसार को जरूरत है। बाकी सब कार्य व्यर्थ है जो होते रहेंगे और क्षण भर के हैं। वे खत्म हो जाएँगे। लेकिन ये कार्य हमेशा रहेगा, जिससे आप देखेंगे कि आपके बाल बच्चे और आपका समाज, व सारा विश्व आपको धन्यवाद देगा।

ये जीवन्त क्रिया है। इसके लिए आप पैसा नही दे सकते। जैसे एक बीज बोया जाय तो धरती माता अपने शक्ति से ही उसको उगा देती है। उसके लिए पैसा तो नहीं देना पड़ता। एक पैसा भी आपसे कोई परमात्मा के नाम से लेता है, समझ लीजीए वे आपके गुरू नही हैं। वो आपके नौकर हैं जो आपके सहारे चलते हैं। धर्म के नाम पे पैसा कमाना महा पाप है। और उनको पैसा देना भी एक मूर्खता का लक्षण है। जब तक आप इस सच्चे दरबार में नही आएँगे, तब तक सच्च और झूठ की पहचान आपको नहीं हो सकती।

संशय करना तो बहुत आसान है। पढ़ लिखकर मनुष्य और भी संशय कर लेता है। इसलिए कबीर ने कहा कि "पढ़ी पढ़ी पंडित मूर्ख भये।" उनकी संवेदना कम हो जाती है और वो बुध्दि के ही तर्क वितर्क से जानना चाहते हैं कि सत्य क्या है। सत्य बुध्दि से परे है। ये इस जीवन्त क्रिया के साथ होता है। अगर आप एक शास्त्री व वैज्ञानिक हैं तो आपको उपने दिमाग को खुला रखना चाहिए। और इसके बाद देखें कि अगर ये घटित होता है, और सिध्द हो जाता है तो फिर आपको ये मान लेना चाहिए, अपने इमानदारी में, क्यूँकि ये आपके हित के लिए है, और सारे संसार के हित के लिए है।

इसी प्रकार एक दूसरा प्रश्न हुआ है कि कलयुग में अवतार कब होगा। अगर अवतार हुआ तो आप क्या उसे पहचानेंगे? पहले ये तो तयारी हो जाए कि हम उन्हें पहचाने जो अवतार होगा। तो सबसे पहले आप में आत्म साक्षात्कार होना चाहिए। तभी आप अवतार को पहचान पायेंगे। उसके बाद आपको सत्य और असत्य की पहचान हो जाएगी। जैसे अन्धेरे में आपने हाथ में एक साँप पकडा हुआ है जिसे आप रस्सी समझ बैठे हैं। लेकिन जैसे प्रकाश आ जाएगा आप अपने आप ही उस साँप को छोड देंगे। उसी प्रकार असत्य आप ही छूट जाता है।

कुण्डलीनी जागृण बिल्कुल ही सहज है। जैसे की एक बीज आप पृथ्वी में छोड़ देते हैं, तो ये माता अप ही आप उसे जागृत कर देती है, क्यूँकि माता में ये सृजन शक्ति है और बीज में भी शक्ति है, तो अप आप घटित हो जाता है। ये प्रकृति का नियम है। आपके किताबे पढ़ने से, या खोज बीन करने से, या चच करने से क्या वो बीज उग जाएगा? जब तक माँ के भीतर नहीं डालेंगे तब तक वो नहीं उग सकता। उस प्रकार ये भी एक जीवन्त कार्य है। ये सूक्ष्म शक्ति हमारे अन्दर कौनसी है जिन शक्ति के कारण हम अमीब से इन्सान बन गए। डाक्टर और वैज्ञानिक भी ऐसे प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकते जिसका जवाब आपको सिर सहजयोग में मिल सकता है। क्यूँकि सहजयोग उस शक्ति से एकाकारिता प्राप्त करता है जहाँ से दुनिया भ की चीजे बनी और जिसको आप विज्ञान जानते हैं। आप के जो सामने है, जो दिखता है उसी का विज्ञा जान सकते हैं। जो चीज़ अदृष्य में है, उसके लिए आपको अदृश्य में उतरना पड़ेगा।

पश्चिम देशों मे खुशाली नहीं है। उनके पास न माँ बाप हैं। न बच्चे, न रिश्तेदारी है। सब कु पैसा पैसा हो जाने से लोग बिल्कुल त्रस हो गए हैं। जो पेड़ की मूल है, इसकी जिम्मेदारी आपकी है कि इ की शक्ति आप सारे संसार को पहुँचायें। नहीं तो आपके ऊपर ज़िम्मेदारी आ जाएगी कि आपने इसको स्वीका ही नहीं किया। अब ये हमारा धरोहर है, विरासत है। अनादि काल से कुण्डलीनी के बारे में अपने देश लिखा हुआ है। ताओ भी कुण्डलीनी है और बाईबल में इसे होली गोष्ट कहते हैं, कि इसका वृक्ष तुम्हारे अन्द है और ये जो जीवन का वृक्ष है, इसी की वजह से आपका पुर्नजन्म होगा। हर जगह कहा गया है कि जो न होने वाली लाफ़ानी चीजों का इस्तेमाल समझ से करना चाहिए। जितने शास्त्र हैं, जितने धर्म हैं उनका मू तत्व एक ही है कि आप उस अनन्त जीवन को प्राप्त करें। बाकी सब व्यर्थ है। जो कुछ भी हम कर र हैं, प्रार्थना करना, मस्जिद, मौदर में जाना, इसका हेतु एक ही है कि उस अनन्त जीवन को प्राप्त करें उसे प्राप्त करने के लिए हमें आत्म साक्षात्कार लेना चाहिए। क्यूँकि ये सहज में है तो लोग सोचते है ि ये कैसे हो सकता है। अगर ये सहज में नही होता तो आप श्वास तक नहीं ले सकते। अगर श्वास ले के लिए आपको किताबे या शास्त्र पढ़नी पड़ती तो कितने लोग जीवित रहते। इसी तरह से ये भी नित्यक आवश्यक चीज़ है। ये क्रिया होनेवाली थी, और घटित होती है। इस पर बृघुमूणी ने एक बड़ा ग्रन्थ लिख है जिसे नाड़ी ग्रन्थ कहते हैं।

मुश्किल ये है कि आपके सामने स्वयंसिध्द रखते हुए भी आपको मिसाले देनी पडती हैं पहले। त लोगों के समझ में आता है। अगर मैं कहूँ कि यहाँ एक अनमोल हीरा पड़ा है, वो आप प्राप्त करें, बस पैसे दीए, तो क्या आप बैठे रहेंगे? सारी दुनिया से लोग दौडकर आयेंगे। वो ही बात मैं अगर कहूँ आपके हृदय में एक हीरा है जिसका प्रकाश अपने चित्त में ले लीजीए तो आप क्या शंका पे शंका करते रहेंगे?

फिर एक और बात पूछी कि ये कृतयुग की बात शास्त्रों में नहीं लिखी। बहुत सी बातें शास्त्रों नहीं लिखी गई। अगर सभी बात लिख दी होतीं, तो आज हम यहाँ क्यूँ खड़े होते? ये भी नहीं लिखा कि कुण्डली

के जाग्रण के बाद आपके उंगलीयों में जागृति आ जाती है। ये भी नहीं लिखा कि इस में आप चक्रों को जान हैं। सब चीज़ जो लिखा है अगर वो आखरी शब्द होता, उसके बाद कुछ बताना ही नहीं होता, फिर ये र अगली बातें क्यूँ कहीं। भविष्य की बात क्यूँ कही? कल युग की बात क्यूँ कही? क्यूँकि कुछ न कुछ कलर में भी कार्य होना है और इतना महत्वपूर्ण, इतना ऊँचा, इतना दिव्य कार्य है कि इस कार्य में आप उ उतरेंगे नहीं आप समझ ही नहीं सकते। पहाड़ के नीचे खड़े होकर आप किसी सुन्दर शहर की शोभा दे नहीं सकते। आपको पहाड़पर चढ़ना होगा। अगर आपके अन्दर छिपा हुआ इतना सौन्दर्य, इतना गौरव, अं इतना सब कुछ है तो इसे पाने में हिचकिचाना कोई बड़ी भारी अकल की बात तो नहीं। आपकी ही सम्प आपके अन्दर है। कुण्डलीनी तो आपके ही अन्दर है, तो उसे पाने में आपको क्यूँ हिचकिचाना चाहिए? कुण्डलीनी के जाग्रण से आप समझ जाएँगे के सारे जितने भी धर्म हुए, तो सारे धर्म एक जीवित वृक्ष एक फूल की भाँति अलग अलग समय आए, और जो लाए उनके सबसे आपस में रिश्तेदारी थी। लेकिन उन लाने के बाद हमने वो फूल तोड़ दीए और उन फूलों को हमने अपने चुंगल में ले लिया और कहने ल कि ये हमारे फूल हैं। ये फिर फूल मर गए और इन मरे हुए फूलों के लिए परेशान हो गए। ये लोग रिश्तेदार हैं। सब ये सोचकर दुनिया में आए थे कि एक के बाद एक हम लोगों को समझाएँगे कि काल अ वाला है और इस काल में आपको आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त होना है और उसी के बाद आप परमात्मा जान सकेंगे। ईसा मसीह ने कहा - अपने को जानो। सब ने यही कहा, जो भी विश्व में महान साधु, महारि अवतरण, पेगम्बर सभी ने एक ही बात कही कि तुम अपने को जानो और पहचानो। मगर कैसे। यही बात कि आपके अन्दर शक्ति है, इसकी जागृति होनी चाहिए और जागृति होते ही आप इसे प्राप्त कर सकते

दिल्ली में दो डाक्टरों को सहजयोग विषय पर एम. डी. की पदवि मिल गई। करनाल मे एक साल का लड़का आया जो बचपन से न बोलता था न सुनता था। सहजयोग में आते ही बोलना शुरू किय खून का केन्सर और अन्य बिमारियाँ ठीक हो गई। पर सहजयोग कोई बिमारी ठीक करने के लिए नहीं ये कुण्डलीनी के जागृति के लिए है। अगर आप ठीक से सहजयोग में बैठें व ध्यान धारणा करें तो आप कोई बिमारी नहीं होती।

असल में शास्त्रों, गीता, रामायण इत्यादि को समझने के लिए बहुत जरूरी है कि हम आत्म साक्षात्क को प्राप्त करें। गीता पे 500 किताबें लिखी हैं। अगर एक ही सत्य है तो इतनी किताबे क्यूँ? क्यूँकि सब दृष्टि सूक्ष्म नहीं।

गीता में ज्ञान योग का वर्णन किया है श्री कृष्ण ने। ज्ञान योग का मतलब पढ़ना, रटना, जान नहीं। ये ज्ञान योग नहीं, ये तो बुध्दि योग है, जिससे आदमी को घमण्ड आ जाता है। और गीता में, लोग गीता नहीं सुना रहे, वे अपनी ही बकवास सुना रहे हैं। ज्ञान का मतलब होता है अपने नसों पे जान ये वली, बुध्द लोगो ने अपने बुध्दि से नहीं जाना क्यूँकि ये कालेज थोड़ी गए थे। उन्होंने अपने नसों प

अपने अन्दर जाना। यही ज्ञान मार्ग है। जब अर्जुन इसे न समझ पाए तो उन्होनें भक्ति मार्ग पर चलने को बताया। पर उन्होंने कहा कि ये भक्ति अनन्य होनी चाहिए। माने की जिसमें कोई दूसरा न हो। जब आपका सम्बन्ध परमात्मा से हो गया, आप ऐकाकारिता में आ गए। रात दिन हरे कृष्ण हरे राम करने से आपको परमात्मा कभी नहीं मिल सकते, उल्टा आपको कैन्सर की बिमारी हो जाएगी। क्यूँकि श्री कृष्ण हमारे विशुध्दि चक्र में बैठे हैं, और उनका नाम इस तरह से बेकार लें, क्यूँकि वे हमारे नौकर नहीं हैं जो हर समय उनका नाम लें। एक साधारण गवरनर का भी आप नाम लेते जाएँ तो आपको पुलीस पकड़ लेगी। और उस सबसे ऊँचा परमात्मा का नाम इस तरह से लेते हैं जैसे कि वो हमारे जेब मे ही बैठा है, जैसे कि वो इतना सस्ता है। फिर वो नाराज हो जाते हैं और हमारे ऊपर आपत्ति आ जाती है। फिर लोग कहते है कि हमने दस लाख जप किए, मंत्र पाठ किया। ये हुआ, क्यूँकि आपको अधिकार नहीं है, जब तक आपकी एकाकारिता नहीं हो। आप पहले आत्म साक्षात्कार को प्राप्त करें फिर एक अक्षर उनका लेने से ही आपका कार्य हो जाएगा। आज तक किसो फायदा हुआ है परमात्मा का फिजूल नाम लेके, संस्था खोलके, तरह तरह के धन्धे करके धर्म के नाम पर। कौन से धर्म में मनुष्य को फायदा हुआ है। हर जगह आफत, गरीबी, परेशानी, और रयीस लोगों के यहाँ बीमारीयाँ, इतना असंतोष है। इतने झगड़े हैं। फिर लोगों ने कहा कि परमात्मा है ही नहीं। उनको जानने के लिए सिर्फ आपकी दृष्टि आप प्राप्त कर लें, जब आप उसको जान लेंगे तब आपका ज्ञान मार्ग पूर्ण हो जाएगा। और तभी आप भक्ति कर सकेंगे।

फिर कर्म योग पर भी श्री कृष्ण ने कहा। कृष्ण तो लीला ही करते थे। वो जानते थे कि लीला से ही आप लोग ठीक होंगे। उन्होंने कहा कि तू जो कुछ कर्म कर रहा है वो कर, पर सब कर्म परमात्मा के चरणों मे रख। पर ऐसा होता नहीं। जब तक आपको आत्मसाक्षात्कार नहीं मिलता, तब तक आपका ये अहम भाव, कि ये मैं कर रहा हूँ, जा नहीं सकता। कोई आदमी किसी का खून करे या गलत काम करे, वो कहे कि मैने परमात्मा पर छोड़ दिया। आपका अहम भाव अभी आपके अन्दर है और उस अहम भाव के ही सहारे आप सब कार्य कर रहे हैं। और हमेशा ये भावना आपके अन्दर बनी रहेगी। पर जब कुण्डलीनी के जागृण से जब आज्ञा चक्र को ये भेदती है तो आज्ञा चक्र में एक तरफ अहंकार, एक तरफ संस्कार जो है, ये पूरा अन्दर की ओर खिंच जाता है। तो आपके जो कर्म है वो सारे के सारे खत्म हो जाते हैं। जानवरों में कोई कर्म का विचार नहीं होता। उन्हें पाप नहीं समझता। मनुष्य ही समझता है कि पाप या पुण्य है। ये उसके अहंकार के कारण है कि वो सोचता है कि मैंने ये किया है, ये पाप किया है। आप सबको माफ कर दीजीए और अपने को भी माफ कर दीजीए। उसी से आज्ञा चक्र खुलता है।

सहज में आने के बाद लोग जब काम करते हैं, तो वो कहते हैं कि ये हो रहा है, ये चल रही है, ये बन रहा है। सहजयोग में आपको पार होना पड़ता है। अगर वो पार न हो तो उसे झूठे सीटीफिकेट नहीं दे सकते कि वो पार है। जैसे एक बीज को पेड़ बनना है वैसे ही आपको वृक्ष बनना है। धीरे धीरे

कुण्डलीनी आपको बनाती है और उधर आपको ध्यान देना पड़ता है। कुण्डलीनी को जागृण करना बहुत सहज है पर उसके बाद उसे सँवारना पड़ता है, समझना पड़ता है। आप में से शक्ति बहने लग जाती है। ये कार्य सबसे अधिक दिल्ली, जो राजधानी है, यहाँ होना चाहिए। पर यहाँ होता क्या है? झगड़े। धर्म के नाम पर झगड़ा करना महा बेवकूफी की बात है। धर्म कभी झगड़ा नहीं सिखा सकता। परमात्मा तो रहमत है, रहीम है, दया के सागर हैं। उनके आश्रय में रहनेवाले कैसे झगड़ा करेंगे। सहजयोग में हर तरह के लोग हैं। मुसलमान, हिन्दु, ईसाई, इत्यादि। ये सब लोग आपस में इतने प्रेम से रहते हैं। उन्हें ऐसा लगता है कि वो विराट के अंग प्रत्यंग में एक हैं। सागर में एक बूंद है जो खो गया है और सागर से एक्कारिता आ गई है और मैं सागर ही हूँ। अब ये आपके लाभ की बात है, और सारे विश्व के कल्याण की बात है। इसे आप समझ के, बूझ से प्राप्त करें और इसमें जम जाएँ।

आप सबको अनन्त आशीर्वाद है।

ॐ

आदि शक्ति पूजा, कलकत्ता 9-4-1990

कलकत्ता की आप लोगों की प्रगति देखकर बडा आनन्द आया। और मैं जानती हूँ कि इस शहर में अनेक लोग बड़े गहन साधक हैं। उनको अभी मालूम नहीं है कि ऐसा समय आ गया है जहाँ वो जिसे खोजते हैं, वो उसे पा लें। आप लोगों को उनके तक पहुँचा चाहिए, और ऐसे लोगों की खोज बीन रखनी चाहिए जो लोग सत्य को खोज रहे हैं। इसलिए आवश्यक है कि हम लोग अपना विस्तार चारों तरफ करें। लेकिन उसी के साथ हमे अपनी भी शक्ती बढ़ानी चाहिए। अपना भी जीवन परिवर्तित करना चाहिए। अपने जीवन को भी एक अटूट योगी जैसे प्रज्वलित करना चाहिए जिसे लोग देखकर के पहचानेंगे कि ये कोई विशेष व्यक्ति है। ध्यान धारणा करना बहुत ज़रुरी है।

कलकत्ता एक बड़ा व्यस्त शहर है और इसकी व्यस्तता में मनुष्य डूब जाता है। उसको समय कम मिलता है। ये जो समय हम अपने हाथ में बाँधे हैं, ये समय सिर्फ अपने उत्थान के लिए और अपने अन्दर प्रगति के लिए है। हमें अगर अन्दर अपने को पूरी तरह से जान लेना है तो आवश्यक है कि हमें थोडी समय उसके लिए रोज ध्यान धारणा करना है। शाम के वक्त और सुबह थोड़ी देर। उनमें जो करते हैं और जो नहीं करते, उनमें बहुत अन्तर आ जाता है।

विशेषकर जो लोग वाहयता बहुत कार्य कर रहे हैं, सहजयोग के लिए बहुत महनत कर रहे है और इधर उधर जाते हैं, लोगों से बात चीत करते हैं, लेक्चर देते हैं, समझाते हैं। उनकी जो रूहानी शक्ति है, जो दैवी शक्ति है, वो धीरे धीरे कम होती जाती है। इसलिए और भी आवश्यक है कि ऐसे लोग ध्यान धारणा आवश्य करें।

सोने से पहले आप थोडी देर ध्यान कर लें। सवेरे नहाने के बाद, यही काफी है। लेकिन जब ध्यान होता है तो कैसे पहचाना जायेगा कि आपका ध्यान ठीक हुआ। ध्यान करते वक्त, आपको निर्विचारिता पहले स्थापित करनी चाहिए। उस वक्त उसको "ये नही" "ये नही" या "नेति" "नेति" इस तरह से अपने विचारों को वापस कर देना चाहिए। करते करते पहले श्वास लेने से आप देखेंगे कि आपमें निविचारिता आ जाएगी। अर्थात फोटो सामने रखना चाहिए। और उसके सामने दीप जलाके, पैर पानी में रखके बैठना चाहिए। जिस वक्त निर्विचारिता आ जाए, और दोनो हाथ में चैतन्य बहना शुरू हो तो आप पैर पोंछकर के जमीन पर ध्यान में बैठ जाएँ। ध्यान में बैठकर के और उसकी गहनता को आप जाने। फिर विचार आना शुरू हो जाए तो उसे फिर कहना कि "ये नही" "ये नही"। या "क्षमा" "क्षमा"। क्षमा शब्द बहुत ज़रूरी है। उस शब्द से भी आपके विचार रूक सकते हैं। जब शान्ती नहीं रही तो आपकी अन्दूणी प्रगती किस प्रकार हो सकती है। जैसे की भूचाल आ रहा हो, तो भूचाल में किसी वृक्ष की प्रगति नहीं हो सकती। तो उस वक्त मनुष्य एक विचारों के भूजाल में फँसा हुआ होता है तब उसकी प्रगति होना असम्भव है। इसलिए आवश्यक है कि उस वक्त वो अपने को शान्त स्थित कर ले। उसके लिए भी एक दो मन्त्र हैं। जिससे आपके अन्दर शान्ती पहले प्रस्थापित हो। धीरे धीरे आप को आश्चर्य होगा कि ये सब प्रयास करने की ज़रूरत पड़ेगी नहीं। आप एकदम निर्विचार हो जाएँगे। किसी भी सुन्दर वस्तु या कलात्मक वस्तु को देखते ही आप एकदम निर्विचार हो जाएँगे। धीरे धीरे ये आदत बढ़ती जाएगी और जैसे जैसे बढ़ेगी ऐसे ऐसे आपकी अन्दूणी प्रगति होती जाएगी। आप एक दालान में आ गए लेकिन और दालान में भी आपको जाना है और पहचानना है अपने को। इसलिए आवश्यक है कि ध्यान धारणा सें गहनता में उतरें। उसकी पहचान ये है कि जब आप ध्यान धारणा से उठेंगे आपका मन नहीं चाहेगा कि उठें। थोडी देर आप फिर उसी ध्यान में लगे रहेंगे। आपको ऐसा लगेगा कि आपको बडा आनन्द आ रहा है। एक दम से आप नहीं उठ सकते। गर ध्यान धारणा के बाद आप अपना चित्त किसी और चीज की ओर ले जा सकते हो, जैसे खाना खाना है, या सोना है , या बाहर जाना है, तो समझना चाहिए कि ध्यान नही लगा। क्योंकि ध्यान से छुटना ज़रा सा कठिन होता है। इस तरह से धीरे धीरे आपकी अन्दर प्रगति होती जाएगी और जब आप बाह्य में कार्य करेंगे तो आपको बडा आश्चर्य होगा कि आपकी शक्ति क्षिन्न नही होती, उल्टी बढ़ती जाती है। ऐसा देखा गया है कि जो फॉरेन्न पार होने के बाद ही दूसरों को जागृति देना चाहते हैं और फिर उनमें पकड़ आ जाते हैं। असल में पकड़ होते नही हैं। जैसे की किसी बैरोमीटर में या किसी यंत्र में आप जान सकते हैं कि यहाँ धुआँ निकल रहा है, कि यहा प्रकाश हो रहा है। उसी प्रकार आप भी अपने अन्दर सब कुछ जान सकते हैं। एक तरह का निर्व्याज स्वभाव आ जाना चाहिए। माने कि निराग आना चाहिए। फिर आपको पकड़ नहीं आएगी। आप कितने भी लोगों पे हाथ चलाएँ, कितनों को भी जागृति दें, कुछ भी कार्य करें। कितनी भी बिमारियाँ ठीक करें, आपके अन्दर उसका कोई असर नहीं आएगा। पर ये दशा आप बगैर ही अगर आप लोगों पर हाथ लगाने लगें तो बड़ी मुश्किल हो जाएगी।

दूसरी बात ये है कि आप लोग पार हो गए हैं, आप बहुत ऊँची स्थिती में आ गए हैं। बड़ी कठिना से ये बात होती है। तो आपको ऐसे लोग मिलेंगे जो अभी अभी सहज योग में आए हैं। वो समझ लेना चाहि कि अभी आएँ है। और उनसें कोई भी आक्रमक बात नही करनी चाहिए। अपने प्रेम से, बड़े जतन से, सम्भाल करके, हो सके तो कुछ खिलाने पिलाने की भी व्यवस्था कीरये। जिससे वो लोग आपको इतना भयंकर न समझें क्योंकि साधु-सन्त लोग तो हाथ में डंडा ही लेके बैठते हैं। उस प्रकार नहीं होना चाहिए। उन्हें महसूस हो जाए कि सारे अपने भाई बहन हैं। उससे ही वो लोग जम सकते हैं। और अधिक्तर मैंने देखा है कि एक आद लोग ऐसे आ जाते हैं सहजयोग में, जो लोगों को बहुत ज़्यादा डिसिप्लीन सिखाते हैं। यहाँ नहीं खड़े हो, ऐसा नही करना है। खास सहज योग में डिसिप्लीन कोई नहीं हैं। क्यूँकि आपकी आत्मा इतनी प्रकाशवान है कि उसके प्रकाश में धीरे धीरे स्वयं ही आप अपने को देखते हैं। और फ़िर धीरे धीरे आप अपने ऊपर हँसने लग जाते हैं। जैसे आपने अपनी प्रगति को प्राप्त किया, धीरे धीरे वो लोग भी अपनी प्रगति को प्राप्त कर लेंगे। ये प्रकाश आपके व्यवहार पे भी पड़ता है और दूसरों के व्यवहार पर भी।

सहज योग में साक्षी स्वरूप प्राप्त होता है। साक्षी स्वरूप तत्व में आप किसी चीज़ की ओर देखते मात्र हैं। उसके बारे में सोचते ही नहीं। कोई भी आपके अन्दर उसकी (रिॲक्शन) प्रतिक्रिया नहीं आनी चाहिए। तो निरंजन देखना चाहिए। माने किसी चीज़ की ओर देखकर के उससे कोई सी भी प्रतिकया न हो। बगैर किसी प्रतिक्रिया के उसे देखना मात्र, ये सबसे बड़ा आनन्द-दाई चेष्ठा है। उसके प्रति कोई लालसा नहीं होती। जैसे कि एक गलीचा है। अगर उसके बारे में विचार ही आते रहें कि अगर ये मेरा है तो जल न जाए। खराब न हो जाए। गर दूसरे का है तो कितने का है, कहाँ से लिया। तो इन विचारों के कारण उसका आनन्द तो आपको मिला ही नहीं। तो जैसे निर्विचारीता पे आने पर जैसे कि एक सरोवर एक दम शान्त, उसमें एक भी लहर न हो,न तरंग हो, ऐसे शान्त मन में,सरोवर में, जिसके चारों तरफ बना हुआ सुन्दर निसर्ग है वो उसमें पूरी की पूरी प्रतिबिम्बित हो और दिखाई दे, ऐसा ही आपका मन हो जाता है।

एक बार एक साधक हमारे पैरो में आए और एक दम से उनकी कुण्डलीनी जागृत हो गई। दूसरे कमरे में जो लोग बैठे थे वो अन्दर आ गए क्यूँकि उनको एक दम से महसूस हो गया कि माँ के साथ जो है उसमें से जो चैतन्य की लहरीयाँ बह रही थी वो उन्हें महसूस हो गईं। उन्होंने उसे गले से लगा लिया जब कि वो उसे जानते तक नहीं थे। और सब आल्हादित्त हो गए। इसी प्रकार जब आप दूसरे सहज योगीयों से मिलेंगे तो आपको ऐसा अनुभव होगा कि जैसे "मैं मुझ से ही मिल रहा हूँ।" नामदेव जब गोरा कुंभार से मिले तो उन्होंने कहा कि मैं तो यहाँ निर्गुण देखने आया था, वो तो सारा निर्गुण साकार हो गया। इस तरह की समझ व सूझबूझ एक सन्त को एक दूसरे सन्त के ही लिए हो सकती है। आज तक तो मनुष्य द्वेष,ईर्षा,इसी में रहता है। लेकिन जब सहजयोगी हो जाता है तो उसको दूसरा सहजयोगी ऐसा लगता है कि मैंने जो निर्गुण को जाना था वो ये सगुण में खड़ा हुआ ये निर्गुण है। इस प्रकार आपसी प्रेम जो है ये बड़ा सूक्ष्म,बड़ा गहन, और बड़ा आनन्द-दायी हो जाता है।

हमें ये समझ लेना चाहिए कि हम बड़े ही सूक्ष्म और बड़े ही मज़बूत धागे से बन्धे हूए हैं और आपसी प्रेम इस से बढ़कर आनन्द की कोई चीज है ही नहीं। अब बहुत से लोगों में ये बात होती है कि मेरा लड़का, मेरी बहन, मेरा भाई, मेरा घर। ये जो ममत्व है ये भी काटना है। इस ममत्व को बिल्कूल ही कम कर देना चाहिए। और इसके छूटते ही आपमें बहुत ही ज़्यादा आनन्द आ जाएगा। "मेरे" की भावना जो है ये अपने को आत्मा से दूर करता है। मैं कौन हूँ? मैं आत्मा हूँ। और जो कहे कि ये मेरी आत्मा है तो फिर वो सहज योगी नहीं। आत्मा अपनी जगह अकेला खड़ा हुआ है। इसका मेरा कोई नहीं है। इसका तो सिर्फ परमेश्वर सें ही रिश्ता है। और आपसे भी ऐसा रिश्ता है जैसे कि एक पेड़ के अन्दर बहता हुआ रस है। जो सब को रस देता है पर किसी में चिपकता नहीं है। मेरा-पन प्रेम की हत्या है। आप एक बूंद मात्र से सागर बन जाएँगे। इसी अमर्यादिता में ही आनन्द है क्योंकि आप समुद्र के साथ उठते हैं और गिरते है। इसी तरह से मनुष्य वर्तमान में आ सकता है। जब ममत्व छूट जाता है तो आप के अन्दर एक बहुत बड़ा आँनदोलन हो जाता है जिससे आप अत्यन्त शक्तिशाली हो जाते हैं। और वही शक्ति कार्यान्वित होती है। और वोही सामूहिकता में बहुत बड़ा कार्य करने वाली है और सारे संसार का उध्दार भी उसी शक्ती के दूवारा हो सकता है।

एक नया दौर शुरु हो रहा है। सहजयोग में भी एक नया दौर आज शुरु हो रहा है। वो ये दौर है कि अब हम एक बड़े ही आंदोलन में आ गए जहां हमें अपने प्रश्न नहीं रहे। पर सबके प्रश्न हमारे प्रश्न हो गए। सारे संसार के प्रश्न हमारे हो गए। इसके लिए एक प्रबलता चाहिए, एक बढ़पन चाहिए। एक ऊँचाई चाहिए जिससे की आप सारे प्रश्नों को ठीक से देख सकें और उसका हाल दे सकें। इसकी जिम्मेदारी सब आप लोगों पर है। सारे सहजयोगियों की ज़िम्मेदारी बहुत ज्यादा है। यही नहीं कि आप लोग सहजयोग से लाभ उठायें, उसका फायदा उठाएँ, उसमें रजें। ये सबके घर घर में पहुँचना है। और सबको ये आनन्द देना है। अगर ये कार्य करते वक्त आप लागों ने किसी तरह से कमज़ोरी दिखाई या किसी तरह से ढिलाई की तो आप उसके लिए ज़िम्मेदार हो जाएँगे, और ये बात बहुत गलत हो जाएगी। इसलिए सहजयोग में पनपे हुए लोगों को चाहिए कि वृक्ष की तरह खड़े हो जाएँ।

कलकत्ते में सारे हिन्दुस्थान का मरम फँसा हुआ है। इसलिए ज़रूरी है कि आप लोग खड़े हो जाएँ और आगे बढ़ें और अपनी प्रगति करें। औरों की प्रगति करें और एक अपने व्यक्तित्व को विशाल बनाएँ। जब भी आपके अन्दर विचार आए कि मेरा बेटा ऐसा है, मेरा घर ऐसा है। तो ऐसे "मेरे" विचार को दूर रखो। तभी आप विशाल हो जाएँगे और ऐसे विशाल लोगों की इस नये आंन्दोलन में ज़रुरत है। और इसकी तैयारीयाँ पूरी होनी चाहिये।

आशा है ये साल आप सबको बडा मुबारक हो। बडा विशेष साल है ये। और इस साल में मैं चाहती हूँ कि इस कलकत्ते में बहुत से लोग सजहयोग में आएँगे। उनको सम्भाल के, प्यार से, आदर से, समझा

कर के। कभी कभी आक्रमक होते हैं। कभी कभी गलत बातें भी कहते हैं। यहां सब किसी न किसी जाल में फँसे है। रूस में तो न उनको डर, न उनका कोई गुरु, एक दम कोरा कागज़ (स्लेट) होता है उस तरह के लोग थे। बहुत आसानी से सबको पार करा। यहाँ तो ऐसा है कि न इधर का न उधर का। मैं इस इस गुरु का, मैं उस गुरु का हूँ। आप अपने नहीं तो इसलिए बहुत समझा बुझाकर बात करनी चाहिए। फिर यहाँ और भी बिमारी ये है, कि गुरु के दर्शन करने जाना। गुरु का काम है बोध, दर्शन देना नहीं। लोगों में जागृति करना। जब तक वो कोई ज्ञान ही नहीं देते तो वो गुरु कैसे बने। गुरु का मतलब है ज्ञान देने वाले। ज्ञान माने आपके नर्सों में आप जाने कि ये चैतन्य क्या है। ये जब तक नहीं दिया तो ऐसे चीजों में फँस जाना भी एक तरह से अपने को नष्ट करना है। आप लोग सब बहुत बड़े साधक थे, और इसी प्रकार आप अनेक लोगों को भी इसका वरदान दें, और उनको सुखी करें। हमारे अन्दर जो कुछ भी घटिया है वो हमारा अपना है, वो यष्टि में भी है, समष्टि में भी है। सामुहिक में भी कुछ कमीयाँ हैं। उन सब कमीयों को देखना चाहिए। हिन्दू, मुसलमान ईसाई या अन्यधर्मों के लोग यही बताएँगे कि कितनी खोज की इन धर्मों में पर कुछ फ़ायदा नहीं हुआ। इसलिए, क्यूँकि ये सब मनुष्य के बनाये हुए धर्म हैं। जिन्होंने धर्म बनाये थे वो नहीं रहे। अब आप लोगों को जो धर्म बनाना है वो असली धर्म है। उसमें नकलीयत बिल्कुल नहीं होनी चाहिए। अगर मनुष्य ने धर्म बनाया है तो वो गलत होगा ही क्यूँकि मनुष्य को अभी परमात्मा का सम्बन्ध हुआ ही नहीं। उन्होंने तो अच्छे भले धर्मों को गलत रस्ते पर डाल दिया। लेकिन अब आप लोगों को जो धर्म बनाना है, जो विश्व धर्म बनाना है। उसमें किसी तरह की मनुष्य की जो गलतीयाँ है, वो नहीं आनी चहिए। क्यूँकि ये दैवीक है और आप लोगों ने आत्म साक्षात्कार प्राप्त किया है। तो इमानदारी के साथ इसको ऐसा बनाना चाहिए कि जो शुध्द हो।, अन्दूणी धर्म हो॥

इसी प्रकार हर आदमी जब देखेगा कि हमने इसमें जो पाया है वो सत्य पाया है। फिर ऐसा होगा कि जिस धर्म के आप पहले थे उस धर्म का सतत हमने यहीं पाया है, ये जो है ये हमारे अन्दर जागृत हो गया है। आप किसी भी मनुष्य के बनाये हूए धर्म का पालन करें, आप कोई भी पापकर्म कर सकते हैं। लेकिन सहजयोग में आने के बाद आप वाके में धार्मिक ही हो जाते हैं। आप सबका भला ही कर सकते हैं। पर जो लोग नए आते हैं उनके साथ चर्चा करते समय बहुत सम्भल कर बात करना, क्यूँकि हो सकता है उनको महसूस हो कि उनके ऊपर आक्रमण हो रहा है। तो बहुत सम्भाल कर उन्हें समझना है कि धर्म हमारे अन्दर जागृत होना चाहिए। जैसे इसा मसीह ने कहा है कि आपकी आँख निरंजन होनी चाहिए। पर किसी क्रिश्चन की आँख निरंजन है क्या? इसी प्रकार इन महान लोगों ने बहुत बड़ी बड़ी बातें करीं। लेकिन वो होता ही नहीं। उससे उल्टी बात होती है। तो इसको धीरे धीरे समझाना चाहिए क्यूँकि ये अन्धेरे से प्रकाश में आ रहे हैं। उन्हें अनुभव देते हुए, उन्हें इस गलत फ़हमी से निकाल लेना है। और उनको धर्म में स्थित

करना पडेगा। धर्म की धारणा उनके अन्दर होनी चाहिए। जो जिस जगह से भी आ जाए उन सबको स्वीकार करना चाहिए। क्योंकि इनमे से बहुत से लोग ऐसे हैं जो वाके सत्य को खोज रहे हैं। सत्य के मार्ग पर चलने वालोंको ही परमात्मा मिल सकते हैं।

ज्योत का कार्य क्या है। ज्योत जब तक जल रहे तब सब काम होता है। उनका कार्य होता है प्रकाश देना। जिस प्रकाश को आपने प्राप्त किया है वो ही आपको सबको देना चाहिए और पूर्ण आत्मविश्वास के साथ। कोई घबरानेकी बात नहीं। छोटे बच्चे बडे आत्मविश्वासी लोग होते हैं। और वो किसी की परवाह नहीं करते। उनको जो ठीक लगता है वो कहते हैं। लेकिन जब हम लोग बड़े हो जाते है तो दिमाग में और चीजें भरी रहती हैं, बहुत से संस्कार हो जाते हैं जिनसे निकलना मुश्किल होता है। तो सिर्फ ये बात समझ लेनी चाहिये कि हमें एक बहुत सुझ बुझ के साथ, समझदारीके साथ एक प्रगल्भता के साथ §मॅच्यूरिटी के साथ§ बढ़पन के साथ सबसे व्यवहार करना चाहिए। सबसे प्यार दिखाना चाहिए क्योंकि ये प्यार ही की शक्ती है और इसी को प्राप्त करना है।

ये सबसे पहली पूजा है आदि शक्ति की। आदि शक्ति से ही सारी शक्तियाँ निकली है। महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती और ये ही 3 शक्तियाँ फिर उन्हीं में ही समाहित होती हैं। आदि शक्ति के सिवाय ये कार्य हो नही सकता। कारण कि सारे चक्रों मे उनका प्रभुत्व है। और वोही हैं, जो कि हर तरह के चक्रों के आपसी सम्बन्ध को सम्भालती हैं, जिसे प्रम संयोग कहते हैं। वो हर सूक्ष्म से सूक्ष्म बातोंको जानती है। जैसे की किसी भी अवतरण को देखें वो पूर्ण है और हमारा जो उत्थान [इव्होल्यूशन] हुआ है, उसके हर एक सीढ़ी पर [माइल=स्टोन] बने खड़े हुए हैं। लेकिन सबका एक ही प्रकार का कार्य था। जैसे देवी का कार्य था दुष्टों का संहार करना और भक्तों को बचाना। इसलिए श्री कृष्णने लीला रचाई। ये सब लीला है। इसमे इतनी गम्भीरता की कोई बात नही है। श्री कृष्ण ने माधुर्य को लेकरके सबको जीता था और उन्होंने ऐसा कर्म किया कि हमारी जो भ्रांतियाँ थी, उसे घुमा कर के, थोड़ी मिठास डाल कर के, अपने चीज़ को कह देते थे। एक बड़ा सुन्दर उनका अवतरण रहा। और उसके बाद महावीर जी, बुध्द इत्यादी का भी गम्भीर अवतरण रहा। और गम्भीरता से उन्होंने आत्मदर्शन की ही बात की। और सम्यग्ज्ञान की बात करी। फिर बहुत गम्भीर चीज़ें हो गई और सर्वसाधारण लोग इसकी और नहीं आए। जो आए तो बेकार गम्भीरता मे चले गए। और अपने रोज के जीवन को बड़ा ही कठिन बना दिया। क्योंकि न बुध्द ने कहा था, न महावीर ने।

अब मानव जाती में जब तक आत्म साक्षात्कार नहीं होता, तब तक उसका ज़्यादा देर तक सीधा चलना कठिन है। ईसा मसीहके बाद सर्व साधारण लोग आए। तो उन्होंने फिर पौल के कहने से जो धर्म की रचना करी, उसके वजह से सारी गड़बड़ीयाँ होगई। इस प्रकार हर धर्म मे गड़बड़ीयाँ होती गई, और इसलिए

धर्म बड़ा कठिन और अगम्य सा बन गया है। और फिर आधुनिक काल में बहुत से लोगोंने भी कुण्डलीनी के बारे में गलत कह दिया।

अब प्रश्न ये था कि मनुष्य को किस तरह से बताया जाय कि परमात्मा हैं, सत्य है, वो आत्मा स्वरूप है। इसलिए फिर आदि शक्ति का अवतरण जरूरी है। आदि शक्ति ही ये कार्य कर सकती है। वो सब चक्रों का कार्य जानती है। और उसे मानव जाती में आकर के, मानव जैसा अवतरण लेना पड़ा। जिससे वो समझे कि इनके अन्दर क्या क्या दोष हैं। और फिर वो दोष निकालने के लिए क्या करना चाहिए। कुण्डलीनी का जाग्रण इन दोषों के रहते हुए भी कैसे हो जाए। कैसे ब्रम्ह नाड़ी में से कुण्डलीनी को जाग्रण कर दी जाए, जिससे मनुष्य इसको प्राप्त कर ले। पहले इसको थोड़े प्रकाश से देखे। देखते देखते स्वयं ही समझ जाए कि उसको अपनी ही ओर दृष्टी करके, देख के, उसको वो शक्ति आ जाए कि उसे ठीक कर ले। ये कार्य ऐसा था कि जिसमें सभी देवी देवताओं का, सभी अवतरणों का और सभी महा पुरुषों का और सबका ही आना जरूरी था। उसी शरीर में धारणा कर कर के और इस संसार में अवतरण आना था। और इसलिए ये अवतरण हुआ है क्योंकि सारे संसार का उत्थान होना है। जिस परमात्मा ने ये सृष्टि बनाई है, जिसने ये सारा संसार रचा है, वो कभी नहीं चाहेंगे कि ये संसार मनुष्य के हाथों बरबाद हो। और इसलिए ये कार्य अत्यन्त विशाल है। ये नहीं हो सकता कि आप (क्रॉस) सूली पे चढ जाएँ, ये नहीं हो सकता कि हम मनन पे बातें करते जाएँ। इस पर मनुष्य को बढ़ना होगा, बनाना होगा। काफी मेहनत का काम है। पर ये सिर्फ माँ ही कर सकती है। माँ की ही शक्ती जो इसे कर सकती है। और उसमें प्यार, सहनशीलता और सूझबूझ न हो तो वो कर ही नहीं सकती। इसलिए इस अवतरण की बड़ी महत्ता है। आपपूजा करें और इसको पाने पर सब कुछ हो ही जाता है, क्योंकि आप जानते हैं कि आदि शक्ति की जो महामाया स्वरूपनी प्रकृति है उसमें एक बड़ा भारी कारण है कि, गर वो महामाया न हो, तो आप उसको कभी जान ही नहीं सकते। वास्तविक में जब तक महामाया स्वरूप है तभी तक आप मेरे नज़दीक आ सकते हैं। नहीं तो आ नहीं सकते। आप सोचेंगे ये तो शक्ति है, इनके पास कैसे जाएँ। इनके पैर कैसे छूएँ। इनसे बात कैसे करें। तो ये महामाया स्वरूप लेने से ही ये चीज़ बहुत सौम्य हो गई है। और इस सौम्यता के कारण ही आज हम सब एक हो गए हैं। और ये भी बहुत ज़रूरी था कि इस महा माया स्वरूप में ही हम रहें, और आप लोग उसे प्राप्त करते रहें और खो न जाएँ। जैसे समुद्र में खो गए। जैसे कबीर ने कहा "जब मस्त हुए फिर क्या बोले"। आप सबको जागृत रहना है और सबको देना है। मैं आपको खोने ही नहीं दूँगी। इस आनन्द में पूरी तरह से विबोध होके, कोई नहीं खो सकता है, इस आनन्द को बाँटे बगैर आपको चैन ही नहीं आने दूँगी। इस तरह की चीज होगी तभी आप लोग समझेंगे कि आपको क्या कार्य करना है। तो आपका भी कार्य साधु संतो से एक तरह से अधिक है कि साधु संतों ने किसी को (रेलाईजेशन) जागृती नहीं दिया था। हाँ उन्हें उपदेश दिया, उन्हें समझाया। आप का कार्य ये है आप सबको जागृती दें। और उनको आत्म साक्षात्कारी बनाएँ और सारे संसार का आप अत्थान प्राप्त करें। बहुत महत्वपूर्ण और दिव्य कार्य है। और

इस कार्य के लिए आदि शक्ति का आना ज़रूरी था और उस आदि शक्ति के आगमन से ही ये कार्य शुरू ह गया है और बहुत अच्छे से हो रहा है। आशा है आप लोग समझेंगे और बहुत से ऐसे फोटो आ रहें हैं, ज चमत्कारी हैं। पर ये फोटो दूसरे लोगों को दिखाना नहीं चाहिए। क्यूँकि उनको विश्वास ही नहीं होगा। औ ये भी फोटो परम चैतन्य बना रहा है, वो भी एक साधारण कैमरा से जिसमें कोई शक्ति नहीं है। और अग इतना प्रकाश मेरे सिर में है तो वो किसी को दिखाई क्यूँ नहीं देता ? सिर्फ वो कैमरा में क्यूँ आ गया ? आ लोगों के लिए मैं तो महा माया ही हूँ। कैमरा के लिए शायद नहीं हूँ। कैमरा के अन्दर की जो अणु रेणु वो मुझे जानते हैं। आपको परमात्मा ने स्वतंत्रता दी है। इन जड़ वस्तुओं को स्वतंत्रता नहीं। वो तो परमात्म के ही आज्ञा से चलते हैं, और पशु भी उन्हीं की आज्ञा में रहते हैं। उस स्वतंत्रता में किसी भी तरह क बाधा न आए, इसीलिए महामाया स्वरुप है। आपके जैसे हम हैं। हमारा सारा व्यवहार भी आप के जैसे है। आशा है कि आदि शक्ति की आज की पूजा आप लोगों को समापन्न हो।

मेरा आनन्त आशीर्वाद ·

†

कलकता पब्लिक भाषण 9/10-4-1990

सत्य के बारे में जान लेना चाहिए कि सत्य अनादि है और उसे हम मानव बदल नहीं सकते। सत्य को हम इस मानव चेतना में नहीं जान सकते। उसके लिए एक सूक्ष्म चेतना चाहिए। जिसे आत्मिक चेतना कहते हैं। आप अपना दिमाग खुला रखें वैज्ञानिक की तरह, और अगर सत्य प्रमाणित हुई तो उसे अपने इमानदारी में मान लेना चाहिए।

एक महान सत्य यह है कि सृष्टि के की चालना एक सूक्ष्म शक्ति करती है जिसे परम चैतन्य कहते हैं। ये विश्व व्यापी है और हर अणु-रेणु में कार्यान्वित है। हमारे शरीर के स्वयं चालित (ओटोनौमस) संस्था को चलाती है। जो भी जीवित कार्य होता है वो उससे होता है। पर अभी हममें वो स्थिती नहीं आई है जिससे हम परम चैतन्य को जान लें।

दूसरा सत्य यह है कि हम यह शरीर, बुध्दी, अहंकार और भावनाएँ आदि उपाधियाँ नहीं हैं। हम केवल आत्मा हैं। और ये सिध्द हो सकता है।

तीसरा सत्य यह है कि हमारे अन्दर एक शक्ति है जो त्रिकोना-कार अस्ती में स्थित है, और यह शक्ति जब जागृत हो जाती है तो हमारा सम्बन्ध उस परम चैतन्य से प्रस्थापित करती है। और इसी से हमारा आत्म दर्शन हो जाता है। फिर हमारे अन्दर एक नया तरह का अध्याम तैयार हो जाता है, जो हमारे नर्सों पर जाना जाता है। जो नस नस में जानी जाए, वोही ज्ञान है। इसको जानने के लिएं कुण्डलिनी का जाग्रण होना चाहीए। ये स्वयं आपकी माँ है। ये आपही की है, और ये माँ आप को पुर्नजन्म देती है। जिस तरह से टेप रिकार्डर में आप सबकुछ टेप कर सकते हैं, उसी तरह इस कुण्डलीनी ने आपके बारे में सब कछ जान

लिया है। क्यूँकि ये साढ़े तीन कुण्डलों में बैठी हुई है इसलिए इसे कुण्डलीनी कहते हैं। ये शुध्द इच्छा की शक्ति है। कोई भी इच्छा पूर्णतय पूर्ण हो जाने पर भी मनुष्य उससे सन्तुष्ट नहीं होता क्यूँकि सर्वसाधारण इच्छा तृप्त होती नहीं। जब ये शक्ती ऊपर की ओर उठती है तो 6 चक्रों में गुजराती, छटे चक्र से ब्रम्हरंद्र को छेदती हुई बाहर निकल आती है। तब ये सूक्ष्म चीज़ आपको चारों तरफ फैले हुए सूक्ष्म शक्ती से [पर चैतन्य से] एकाकारिता देती है। जैसे माईक है, अगर हमने इसे मेन्स के साथ नही जोड़ा तो ये बिल्कुल बेकार है। इसी प्रकार मनुष्य भी उस परम चैतन्य को प्राप्त किए बगैर सत्य को नहीं जान सकता है। सब अपना अपनी बात को सत्य मानते हैं। सत्य में कोई भी मतभेद नहीं होता। वो मतभेद सत्य के अलग पहलू तो अलग ढंग से देखे जाते हैं। जब तक आपके चित्त में आत्मा नहीं आता है तब तक आपके अन्दर आत्म प्रकाश नहीं आता और आप अन्धेरे में ही टटोलते रहते हैं। मनुष्य ने समाज की धाराणाऐं बनाई हैं इसलिए हमारे समाज में त्रुटियाँ है, सन्देह है, भ्रांति है। हमें उस स्थिती को प्राप्त करनी चाहिए जिससे हम बड़े ऋषि मुनि, अवतरण, वली, तीर्थत्यन्कर आदि को समझ सकें और इन लोगों के जैसे बन जाऐं। मतलब, धर्म की धारणा हमारे अन्दर होती है। मगर जो एक धर्म का ही पालन करता है वो कोई भी पाप कर्म कर सकता है। गलती कर सकता है। क्यूँकि धर्म की भावना तो सिर्फ आपकी दिमागी जमा खर्च है। उसका आपके अन्दर प्रवेश नहीं हुआ। धर्म की धारणा अपने अन्दर करने से ही हमारा हित्त होगा।

किन्तु ये करते वक्त एक सहज तरीके से कुण्डलीनी उठती है क्यूँकि ये एक जीवन्त प्रक्रिया है। जैसे पृथ्वी में आप बीज छोड़ दे तो वो सहज में ही पनप जाता है। हर एक में उसी प्रकार ये कुण्डलीनी बैठी हुई है कि जब मेरा बेटा चाहेगा तब मैं उठूंगी। वो ज़बरदस्ती से आपको पुनर्जन्म नहीं देना चाहती है। आपकी स्वतंत्रता को ही देखकर जागृत होगी। और कोई भी इस मामलें में ज़बरदस्ती नहीं कर सकता। सबसे पहले कुण्डलीनी जाग्रण से आपकी शारीरिक स्थिती ठीक हो जाती है। क्यूँकि आपके शरीर में सारे चक्र पूरे प्लावित हो जाते हैं। इन्हीं चक्रों के शक्ति के द्वारा हम जीवित हैं और उसी से हमारा सारा व्यवहार चल रहा है। किन्तु जब हम शक्ति को अनायास बहुत ज़्यादा इस्तेमाल करते हैं तब ये चक्र क्षीन हो जाते हैं। इस तरह से हमारे अन्दर बिमारीयाँ आ जाती हैं। लेकिन कुण्डलीनी जागरण के बाद तो जिन बीमारीयों का इलाज ही नहीं, जो मरने तक आ गए ऐसे बीमारीयाँ एक ही रात में ठीक हो गई।

इसके लिए हमें ऋषि मुणियों का धन्यवाद करना चाहिए, जिन्होंने सहज योग ढूंढ निकाला। पहले एक या दो इन्सान ही इस योग को जानते थे। किन्तु ऐसा समय आ गया है कि आपको सामूहिक तरीके से जागृति हो सकती है। इस तरह की जागृति होने से शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और सांसारिक व्यथाऐं दूर हो जाती हैं। और लक्ष्मी का भी आप पर बहुत आर्शीवाद आता है। क्यूँकि हमने लक्ष्मी देवी, सरस्वती देवी का साक्षात पाया नहीं था हमें लगा कि ये सब होता ही नहीं है। उसको सिध्द करने का समय आ गया है। ऑस्ट्रेलिया में दो ऐडस के आदमी ठीक हो गए सहज योग से। अपने देश में इतनी व्यथाऐं हैं, इतनी गरीबी है। इन

लोगों के पास पैसा नहीं कि वो अपनी बिमारीयाँ ठीक करें, डाक्टरों के बिल भरें, ऐसे लोगों के लिए सहज योग बहुत उपयुक्त है। सहज योग से आपकी खेती में, पशुपालन में सबमें बहुत असर आता है। अनेक क्षेत्रों में इसका कार्य हो सकता है। सहज योग से आपके अन्दर शान्ती प्रस्थापित होती है। जिनके अन्दर शान्ती नहीं वो बाहर किस तरह से शान्ती प्रस्थापित करेंगे।

आपके अन्दर साक्षी - स्वरूप तत्व आ जाता है। आप के अन्दर निर्विचार समाधि स्थापित हो जाती है। फिर उसके बाद निर्विकल्प समाधि, माने, चेतना आपके अन्दर आ जाती है। आपके नस नस में सामूहिक चेतना जागृत हो जाती है जिसके अनुसन्धान से आप जान सकते हैं कि दूसरे आदमी को कौन सी शिकायत, त्रुटि है। और आपको कौन सी शिकायत और त्रुटि है। उसको ठीक करने की किया अगर आप सीख लें तो आप दूसरों की भी मदद कर सकते हैं और अपनी भी मदद कर सकते हैं। इसके लिए आप पैसा आदि कुछ नहीं दे सकते। जो इन्सान परमात्मा के नाम पर पैसा ले वो आपका गुरू नहीं, आपका नौकर है। मैं एक माँ हूँ और मैं ये कहूँगी कि जिस गुरु ने आपकी तबीयत ही ठीक नहीं रखी, ऐसे गुरू को रखने से क्या फायदा। गुरू दर्शन के लिए नहीं होता है। गुरु ज्ञान के लिए होता है और अनुभव के लिए। इसी तरह पढ़ पढ़ करके आप परमात्मा को नहीं जान सकते। क्यूँकि परमात्मा बुध्दि से परे हैं। प्रश्न पूछने से या उसका उत्तर पाने से क्या कुण्डलीनी का जाग्रण हो जाएगा?

अमीबा से हम मनुष्य स्वरूप हुए। इससे ऊँची एक और दशा है, कि हमें आत्म स्वरूप होना चाहिए। और जब तक हम आत्म स्वरूप नही होते, हमे चैन नहीं आने वाला। आपकी सम्पत्ती और आपको ही देने आयें हैं। इससे आपको क्यूँ दिक्कत होना चाहिए। आपके अन्दर एक बड़ा भारी हीरा चमक रहा है जिसे आत्मा कहते हैं। इसे प्राप्त करें।

मानव सबसे ऊँची चीज़ है उत्क्रान्ति में। उसे बस इतना ही प्राप्त करना है। रूस के लोग बहुत गहरे हैं। उन्होंने कभी धर्म नहीं सुना, कभी देवी का नाम नहीं सुना। पर ये लोग एक दम पार हो गए। इतने शुध्द तबीयत के लोग जो खोज रहें है अन्दर से सत्य। वहां की गोवरमेन्ट ने भी हमें रिकगनाइज कर लिया है और साईबेरिया तक सहज योग फैल गया है। मेडीकल में, एज्युकेशन में हर चीज में। वहां के मिनिस्टर्स तक। उन लोगों में अहंकार नहीं है। इसीलिए शायद इस तरह से ये कार्य हुआ है। आशा है यहां पर भी इसी प्रकार ये कार्य होगा। ये तो देवी का बड़ा भरा स्थान है और कलकत्ते से तो मुझे बहुत ज़्यादा अपेक्षा है।

जब तक हम सत्य को जान नहीं लेते तो किसी भी बात को प्रमाण मान लेना या सत्य मान लेना बहुत बड़ी गलती कर देता है। बहुत लोग सोचते हैं कि ये धर्म सत्य है, वो धर्म सत्य है। सत्य एकही है।

कुण्डलीनी से किसी को भी तकलीफ़ नहीं होती। उत्क्रान्ति में हमने जो कुछ पाया है तो हमारे सेन्ट्रल नर्व्हस सिस्टिम में जानते हैं। एक जानवर, समझे एक कुत्ता, वो गर गन्दी गली से निकल जाए तो उसे कोई

तकलीफ़ नहीं होती। लेकिन मनुष्य ये नहीं कर सकता क्योंकि उसके अन्दर एक चेतना आ गई है जिससे वो गन्दगी को देखता है, समझता है और घृणा करता है। इसी प्रकार हमारी ये चेतना प्रगट हो जाती है, और हमारे अन्दर ही धर्म धारणा हो जाती है तो फिर वो कोई गलत काम नहीं करता। जैसे सन्त साधु कभी गलत काम नहीं करते थे।

जब कुण्डलीनी का जाग्रण होता है तो हमारे अन्दर पूरी तरह से राजयोग प्रतीत होता है। जैसे जब मोटर आपने शुरु कर दी तो उसकी मशीनरी अपने आप चलने लग जाती है, उसी प्रकार जब कुण्डलीनी जाग्रुत होती है तो किसी भी चक्र से गुजरती है तो वो चक्र का बन्ध पड़ जाता है, जिससे कि कुण्डलीनी नीचे न आए। लेकिन जब विशुध्दी चक्र पर आती है तो आपकी जुबान भी अन्दर के तरफ थोड़ी सी खिच जाती है बन्द के लिए। इसका मतलब ये नहीं कि मोटर शुरु करने से पहले आप धक्का घुमाना शुरु करें। आजकल के योग जो मनुष्य नें बनायें हैं वो उसी प्रकार के कृत्रिम हैं। हठ योग तभी करना चाहिए जब कुण्डलीनी का जागरण हो। जब शारीरिक दोष हो उस चक्र पर, तब आपको आसन लगाना चाहिए। हठ योग हम ऐसे करते हैं जैसे की सारी दवाईयाँ एक साथ खा रहे हों। प्राणायम भी हम कृत्रिम तरीके से ही करते हैं। जिस वक्त आपकी कुण्डलीनी चढ़ती है और आपके अन्दर राईट साइड की शक्ती कम हो जाए, तब हम लोग प्राणायम कर सकते हैं, पर सूझ बूझ के साथ। पर आप बेकार में ही प्राणायम करें तो हो सकता है कि आप को व्याधियाँ हो जाएँ, या आप एक दम शुष्क हो जाएँ। इतने शुष्क हो जाएंगे की आपके अन्दर कोई भावना नहीं रह जाएगी। और हो सकता है कि आप अपने पत्नी को, बच्चों को छोड दें और सोचें कि मैं बड़ा भारी साधू सन्यासी बन गया। इस तरह का असंतुलन,जीवन में आ जाता है। जिस वक्त जिस चीज़ की ज़रुरत होती है वो सिर्फ़ कुण्डलीनी के जाग्रण के बाद ही जानी जाती है कि आज कुण्डलीनी उठके कौन से चक्र पे गई और कहाँ रुकी।

हमारे अन्दर तीन नाडीयाँ हैं। पहली है महाकाली की नाड़ी। ये बाएँ ओर की सिम्पथैटिक नर्व्हस सिस्टिम को देखती है और दायें ओर की नाड़ी है महा सरस्वती की, वो हमारे राईट साइड की सिम्पथैटिक नर्व्हस सिस्टिम को देखती है। बीच की नाड़ी जो सुषुमना नाड़ी है वो हमारी पॉरा सिम्पथैटिक सिस्टिम को देखती है। बाएँ ओर जो है वो सिर्फ हमारी भावनाएँ, हमारे इच्छाओं को पूरा करती है। ये इच्छा शक्ती की इडा नाड़ी है। या चन्द्र नाड़ी जो कुछ हमारा भूतकाल है, वो लेफ्ट साईड में इसके साथ समाहित है।

राईट साइड की नाड़ी को सूर्य नाड़ी या पिंगला नाड़ी कहते हैं। ये हमारे शारीरिक और मस्तिश्क के काम - सोचना, विचारना आदि के कार्य करती है। ये कार्यान्वित होती है जब हम भविष्य की सोचते हैं। मध्य नाड़ी इन दोनों को संतुलन में रखती है। जैसे कि आप बहुत ज़ोर से दौडे तो आप के हृदय के ठोके बढ़ जाएँगे। लेकिन इन ठोकों को फिर शान्त कर देना तो किस तरह से बिल्कुल नॉर्मल हो जाते हैं, ये पारा सिम्पथैटिक नर्व्हस सिस्टिम या सुषुम्ना नाड़ी का काम है। जब कुण्डलीनी जाग्रुत होती है तो सुषुम्ना नाड़ी के अन्तरतम जो नाड़ी है जिसे ब्रह्म नाड़ी कहते हैं उससे जाती है। और एक बाल के जैसे शक्ती ऊपर जाकर के ब्रम्हरंद्र को छेदती है। ये छेदन होते ही ऊपर से परम चैतन्य बहने लगता है और उससे आपके संकीर्ण चक्र खुल जाते हैं। इस प्रकार आपका सम्बन्ध उस परम चैतन्य से हो जाता है जिसकी सूक्ष्म सृष्टि है और जिसे हमने आज तक जाना नहीं। ये जानना हमारे उँगलीयों पर होता है। हाथों में चैतन्य की लहरीयाँ बहने

शुरु हो जाती है। श्री शंकाचार्य ने इसे "सलीलम" कहा है। ठंडी ठंडी हवा, हाथ में आने लग जाती है। ये हवा हमको बताती है और जताती है कि हमारे अन्दर कौन से दोष हैं और दूसरों के अन्दर कौन से दोष हैं। जब हमारा ब्रम्हरन्द्र छेद होता है तो हमारे सिर से भी ठंडी हवा आने लगती है। पर जब तक हम इसका उपयोग नहीं करेंगे हम समझ नहीं सकेंगे कि ये ठंडी हवा क्या चीज़ है और इससे क्या प्राप्त होता है।

जब मनुष्य अपने भूतकाल के बारे में सोचता है, और हर समय दुखी रहता है और अपने को बहुत न्यून समझता है। उस वक्त हम इस नाडी पर गिरते गिरते हम सामुहिक सुप्त चेतना में चले जाते हैं। (कलेक्टिव्ह सब-कोनशस) इससे हमें बहुत मानसिक त्रास होता है। ऐपिलेप्सी की बिमारी हो जाती है। दुःखी किसम के लोग होते हैं, जो लोग पागल हो जाते हैं, ये सब इसी नाड़ी के कारण।

दाये ओर की नाड़ी कम होती है जब हम बहुत ज़्यादा सोचते हैं, या बहुत शारीरिक श्रम करते हैं। बहुत ज़्यादा सोचने से हमारे अन्दर बहुत असंतुलन आ जाता है। अगर हम संकीर्ण होते जाएँगे, और आपकी शक्ति भी क्षीण होती जाएगी अगर किसी आघात से, बाएँ या दाये इसे तोड़ दे तो आपका सम्बन्ध जो मेन्स से है, वो टूट जाएगा। डायबिटीय, लिव्हर, किडनी की बिमारी पिंगला नाडी में खराबी आने से हो जाती है। ब्लड प्रेशर, टेन्शन वगैरह होता है। इसका एक ही कारण है - आजकल का जीवन। इसमें हमें बहुत संघर्ष से रहना पडता है। और फिर मनुष्य बहुत सोचता है। आगे की बातें सोचता रहता है। इस सोच विचार से आपकी स्वाधिष्ठान चक्र, जिसे एक बहुत ज़रूरी कार्य करना होता है। कि हमारे मस्तिक में जो ग्रे सेल्स हैं, उनको बार बार पूरा करें। बहुत विचार करने से ये ग्रे सेल्स खत्म होते जाते हैं, और सारा ध्यान इस चक्र का जाता है सिर्फ ग्रे सेल्स बदलने में। तो बाकी के जो काम वो करता है वो रह जाते है। जैसे लिव्हर को प्लीहा, पाचग्रन्थी, गुर्दा, अँतडी को देखना। तो इन में बिमारीयाँ हो जाती हैं। ये सिर्फ सहज योग के द्वारा ठीक कर सकते हैं। कुण्डलीनी जाग्रण से, इन चक्रों को फिर से जोड़ देती है। और फिर से खोल देती है, और फिर से शक्ति उस चक्र में आ जाती है और कुण्डलीनी स्वयं ही उस चक्र को प्लावित कर देती है।

डायबिटीस बहुत सोच विचार करने वाले लोगों को होती है। तो उनका पैंक्रियास खराब हो जाता है। खून का केन्सर हमारे प्लीहा के वजह से होता है। आज कल का जीवन बहुत ही उथल पुथलवाला है। तो उसे शोक लगता है फिर ये स्प्लीनथक जाती है फिर ब्लड केन्सर हो जाता है। हमारे आजकल का जीवन बहुत असंतुलन का जीवन हो गया है। इस वक्त हम कुण्डलीनी जाग्रण से ही अपने चक्रों को प्लावित कर सकते हैं।

इडा नाड़ी के बारे में कहना है कि जो मनुष्य रात दिन रोते रहता है। बंगाल में इतनी कला है, देवी का इतना कार्य हुआ तो यहाँ इतनी गरीबी क्यूं। इसका एक कारण ये है कि यहाँ काला जादू, तांत्रिक बहुत है। पूरे विश्व में से यहाँ सब से ज़्यादा है। महाकाली के विरोध में ये लोग कार्य करते हैं। अगर इस काली विद्या को आप उखाड़ फेंकिये, तो दीखिये कि लक्ष्मी का वास यहां आ जाएगा। इस काली विद्या से बहुत लोग यहां पर बिमार हैं। अगर आपको सत्य को खोजना है और अगर आप अपना हित चाहते हैं तो ये सबको छोड़कर के सहज योग में आएँ।